Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ وَعَلٰی عَبْدِہِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْد

وَلَقَدْ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

اِنَّ الَّذِیْنَ اشْتَرَوُا الْکُفْرَ بِالْاِیْمَانِ لَنْ یَّضُرُّوا اللّٰہَ شَیْئًا وَلَھُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ○

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवादः वे लोग जिन्होंने ईमान के बदला में कुफ़्र ख़रीद लिया वे हरगिज़ अल्लाह को नुकसान नहीं पहुंचा सकेंगे। और उन के लिए बहुत पीड़ादायक अज़ाब निर्धारित है।

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 10

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

9 रजब 1441 हिजरी कमरी 5 अमान 1399 हिजरी शमसी 5 मार्च 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

यह एक वास्तविक और विश्वसनीय बात है कि अल्लाह तआला उन लोगों की सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं, परन्तु जो सुस्ती से काम लेते हैं वे अन्त में हलाक हो जाते हैं

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

لِکُلِّ دَاءٍ دَوَاءٌ का वसीअ मफ़हूम

यह बात ठीक नहीं कि कुछ अख़लाक़ के तबदील पर वह क़ादिर है और कुछ पर नहीं। नहीं नहीं! हर एक बीमारी का ईलाज मौजूद है। لِکُلِّ دَاءٍ دَوَاءٌ अफ़सोस! लोग आपके इस मुबारक कथन का सम्मान नहीं करते और इस को सिर्फ ज़ाहिरी मरीज़ों ही तक सीमित समझते हैं। यह कितनी नादानी और ग़लती है। जिस हाल में एक नश्वर जिस्म के लिए उस के सुधार और भलाई के सारे सामान मौजूद हैं ,तो क्या यह हो सकता है कि इन्सान की रुहानी बीमारियों का दूर करना अल्लाह तआला के हुज़ूर कुछ भी नाहो? है! और ज़रूर है !!

यह एक निश्चय और यक़ीनी बात है कि ख़ुदा तआला उन लोगों की मदद करता है जो आप अपनी मदद करते हैं, लेकिन जो सुस्ती और ग़फलत से काम करते हैं वे अन्त में हलाक हो जाते हैं।

बुढ़ापे की दो किस्में

इन्सान पर जैसे एक तरफ़ نَقْصٌ فِی الْخَلْقِ का ज़माना आता है जिसे बुढ़ापा कहते हैं उस वक़्त आँखें अपना काम छोड़ देती हैं ओर कान सुन नहीं सकते। अत: शरीर का हर एक अंग अपने काम में रुकावट और बेकारी के क़रीब क़रीब हो जाता है। इसी तरह से याद रखो कि बुढ़ापा दो किस्म का होता है। तबई (क़ुदरती) और ग़ैर तबई (ग़ैर क़ुदरती)। तबई तो वह है जैसा कि ऊपर ज़िक्र हुआ। ग़ैर तबई वह है कि कोई अपनी लगी हुई बीमारी की फ़िक्र न करे तो वे इन्सान को कमज़ोर कर के समय से पहले बूढ़ा बना दें। जैसे शारीरिक प्रणाली में यह तरीक़ा है ऐसा ही अंदरूनी और रुहानी निज़ाम में होता है। अगर कोई अपने फ़ासिद आचरण को उत्तम आचरण और अच्छी आदतों से तबदील करने की कोशिश नहीं करता तो इस की अख़लाक़ी हालत बिलकुल गिर जाती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश और कुरआन करीम की शिक्षा से यह बात स्पष्ट प्रमाणित हो चुकी है कि हर एक बीमारी की दवा है लेकिन अगर सुस्ती और ग़फलत इन्सान पर छा जाए तो फिर हलाक़त के अतिरिक्त और क्या मार्ग है अगर ऐसी बेनियाज़ी से ज़िन्दगी बसर करे जैसे कि एक बूढ़ा करता है तो क्योंकर बचाओ हो सकता है।

अख़लाक़ की तबदील मुजाहिदा (चेष्टा) और दुआ से संभव है।

जब तक इन्सान मुजाहिदा ना करेगा दुआ से काम ना लेगा वह ग़ुमरह जो दिल पर पड़ जाता है दूर नहीं हो सकता। अत: अल्लाह तआला ने फ़रमाया है

اِنَّ اللّٰہَ لَا یُغَیِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰی یُغَیِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِھِمْ

(अर्राद:12) अर्थात ख़ुदा तआला हर एक किस्म की आफ़त और बला को जो क़ौम पर आती है दूर नहीं करता है जब तक ख़ुद क़ौम उस को दूर करने की कोशिश न करे। हिम्मत न करे बहादुरी से काम न ले तो क्योंकर तबदीली हो। यह अल्लाह तआला की एक अपरिवर्तनशील सुन्नत है। जैसे फ़रमाया

وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّۃِ اللّٰہِ تَبْدِیْلًا

(अल्अहज़ाब: 63) अत: हमारी जमाअत हो या कोई हो वो तबदील अख़लाक़ उसी अवस्था में कर सकते हैं जबकि मुजाहिदा और दुआ से काम लें वर्ना संभव नहीं है।

अख़लाक़ की तब्दीली के बारे में दो राए

दार्शिनकों के अख़लाक़ की तबदीली पर दो राय हैं। एक तो वे हैं जो ये मानते हैं कि इन्सान अख़लाक़ की तबदीली पर क़ादिर है और दूसरे वे हैं जो ये मानते हैं कि वह क़ादिर नहीं। असल बात यह है कि सुस्ती और काहली न हो और हाथ पैर हिलाए तो तबदील हो सकते हैं। मुझे इस स्थान पर एक हिकायत याद आई है और वह यह है। कहते हैं कि यूनानियों के मशहूर फिलासफर अफ़लातून के पास एक आदमी आया और दरवाज़ा पर खड़े हो कर अंदर सूचना कराई। अफ़लातून का नियम था कि जब तक वह आने वाले का हुलिया और चेहरा के बनावट को मालूम न कर लेता था अन्दर नहीं आने देता था। और वह क़ियाफ़ा से इस्तिंबात कर लेता था कि वर्णन किया गया आदमी कैसा है कैसा नहीं। नौकर ने आकर उस आदमी का हुलिया नियम के अनुसार बतलाया। अफ़लातून ने जवाब दिया कि इस आदमी को कह दो कि चूँकि तुम में गन्दे अख़लाक़ बहुत हैं मैं मिलना नहीं चाहता। इस आदमी ने जब अफ़लातून का यह जवाब सुना तो नौकर से कहा कि तुम जा कर कह दो कि जो कुछ आपने फ़रमाया वह ठीक है मगर मैंने अपनी गन्दी आदतों को समाप्त कर के सुधार कर लिया है। इस पर अफ़लातून ने कहा। हाँ यह हो सकता है। अत: उस को अंदर बुलाया और बहुत सम्मान के साथ इस से मुलाक़ात की। जिन दार्शिनकों का ये विचार है कि अख़लाक़ तबदील होना संभव नहीं। वे ग़लती पर हैं। हम देखते हैं कि कुछ नौकरी पेशा लोग जो रिश्वत लेते हैं जब वे सच्ची तौबा कर लेते हैं फिर अगर उनको कोई सोने का पहाड़ भी दे तो इस पर निगाह भी नहीं करते।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 117 से 119 प्रकाशन कादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर जर्मनी, जुलाई 2018 ई (भाग-5)

इमाम जमाअत अहमदिया ने दुनिया के सामूहिक ख़तरों की विस्तारपूर्वक समीक्षा पेश की मगर एक मज़हबी सरबराह के तौर पर ख़ुद को इन चीज़ों से अलग और बाहर रखा और ख़तरों की निशानदेही ज़रूर की मगर न तो किसी का नाम लिया और न ही बातचीत के दौरान उनके अंदाज़ से किसी तरफ़ ख़ास झुकाओ का तास्सुर रहा था।

उनकी नसीहत का अंदाज़ दर्दभरी चेतावनी थी ना कि ज़ाती पसंद नापसंद का। ज़ाती झुकाओ का छोटी सी शंका भी आपकी बातचीत से नहीं मिली और मज़हबी सरबराह का यही स्थान है कि वह नसीहत करे और तवज्जा दिलाए मगर ज़ाती झुकाओ से ऊंचा हो कर , इस लिहाज़ से में ख़लीफ़ा की बातचीत में पाई जाने वाली स्यासी दूरदृष्टि को मानने वाला हो कर जा रहा हूं।

आज जब मैंने ख़लीफ़ा की तक़रीर सुनी तो मुझे हर एक शब्द में अमन ही अमन नज़र आया, ख़लीफ़ा बहुत नेक वजूद हैं, अगर कोई अहमदी न भी हो तब भी यही है कहे कि आप ख़ुदा की तरफ़ से हैं, जो भी आप कहते हैं वह हमारे ही फ़ायदा के लिए है और आप बड़ी दिलेरी से सच्चाई कहते हैं।

आपने यह साबित किया है कि मज़हब मस्ला नहीं बल्कि समस्याओं का हल है, मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ और इस अवसर को कभी न भुला पांऊंगी। मैं समझती हूँ कि समस्त दुनिया में आप इस्लाम के प्रतिनिधि हैं

आप वह शख़्सियत हैं जो लोगों को इस्लाम क़बूल करने पर मजबूर कर देंगे और इस बात पर लोगों को यक़ीन दिला देंगे कि इस्लाम अमन का मज़हब है

आपने सयासी मामलों पर इस तरह रोशनी डाली है जिस तरह बेहतरीन समीक्षक नहीं कर पाते

यही कहना चाहती हूँ कि ख़लीफ़ा बहुत अज़ीम शख़्सियत हैं और मैं उनकी अज़मत की मानने वाली हो गई हूँ।

आप बहुत ही आला शख़्सियत के मालिक हैं, आपकी इस साल की तक़रीर तो पिछले साल से भी अच्छी थी।

दूसरे लोग सियासतदानों की तरह बातें करते हैं, वह सिर्फ अपने सुनने वालों को ख़ुश करना चाहते हैं।

परन्तु ख़लीफ़ा का मक़सद ही कुछ और है और आपका मक़सद सिर्फ और सिर्फ सच बोलना है, आप वास्तविक इल्मी शख़्सियत हैं, जिस बात ने मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित किया वह ख़लीफ़ा का साहस था

आपने जिस तरह अमरीका , रूस , चीन , इस्राईल और समस्त बड़ी ताक़तों की बात की है और बताया है कि ये नाइंसाफ़ी से काम ले रहे हैं, ये बातें कोई आम व्यक्ति नहीं कर सकता

कुछ साल पहले मेरी माता ने अहमदियत क़बूल की थी ,आज हुज़ूर को देखने और हुज़ूर का ख़िताब सुनने से मेरी समस्त शंकाएं दूर हो गई हैं। मुझे आपके वजूद से नूर निकलता महसूस हुआ, मेरी माता बहुत ख़ुश होंगी क्योंकि अब मुझे यह एहसास बहुत शिद्दत से होने लगा है कि मुझे अहमदी हो जाना चाहिए।

हुज़ूर अनवर का ख़िताब सुनने के बाद मेहमानों की ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

(दिनांक 6 जुलाई 2019 शनिवार)

जॉर्जिया से आने वाले मेहमानों की हुज़ूर से मुलाक़ात

इस के बाद जॉर्जिया से आने वाले मेंबर पार्लीमैंट और कुछ अफसरों ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इस वफ़द की संख्या पाँच थी जिन में Giorgi Gabashvili (मैंबर पार्लीमैंट) Mr Sergo Ratiani (मैंबर पार्लीमैंट) Mr Beka Mindiashvili जो कि Head of tolerence and diversity centre हैं Mr George Ugulava (यह यूरोपियन जॉर्जिया पार्टी के सैक्रेटरी जनरल हैं।)और प्रैस स्पीकर यूरोपियन जॉर्जिया पार्टी Mr Irakli Kiknavelidze शामिल थे।

इस वफ़द के साथ देश की सियासत के बारे में से विभिन्न मामलों पर बातचीत हुई। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप का देश एक शान्तिप्रिय देश है तो आप पर्यटन को डिवेलप क्यों नहीं करते। इस से आपकी इकनॉमिक बढ़गी होगी।

मुबल्लिग़ सिलसिला जॉर्जिया ने बताया कि जब हुज़ूर अनवर जलसा में ग़ैर मुस्लिम और ग़ैर अहमदी मेहमानों के साथ ख़िताब फ़र्मा रहे थे तो मैंबर पार्लीमैंट sergio rathiani तक़रीर के दौरान बार-बार मुझे इशारा करके कह रहे थे कि क्या ही अच्छी तक़रीर है। ख़लीफ़तुल मसीह ने to the point बात की है। कहने लगे कि ऐसी तक़रीर बहुत कम सुनने में मिलती है।

मुलाक़ात में जब हुज़ूर अनवर ने जॉर्जिया के बारे में बातचीत फ़रमाई तो बहुत हैरान हुए और कहने लगे कि हमारे छोटे से देश जॉर्जिया के बारे में ख़लीफ़तुल मसीह को ग़ैरमामूली इल्म है।

मुलाक़ात का यह प्रोग्राम 9 बजकर 10 मिनट तक जारी रहा। आख़िर पर वफ़द के मेंबरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

अरब मेहमानों की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार अरब देशों से आने वाले मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। अरबों की मुलाक़ात का प्रबन्ध एक बड़े हाल में किया गया था। अरब मर्द तथा औरतें की संख्या 350 के लग भग थी। उनमें ग़ैर अहमदी लोगों की संख्या 120 थी। जर्मनी के इलावा ये अरब लोगों हॉलैंड ऑस्ट्रिया , नार्वे, स्वीडन , फ्रांस , स्पेन और इटली से आए थे। विभिन्न लोगों ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में दुआ की दरख़ास्त की। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अल्लाह तआला सब पर फ़ज़ल फ़रमाए

एक औरत ने निवेदन किया कि मैं जलसा की मुबारकबाद देना चाहती हूँ मेरी दुआ है कि लोग फ़ौज दर फ़ौज अहमदियत में दाख़िल हूँ। मेरी बेटी ने क़सीदा हिफ़्ज़ किया है वह सुनाना चाहती है। इस पर हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए फ़रमाया , दो शेअर सुना दें। अत: बच्ची ने निहायत रिक़्क़त के साथ क़सीदा पढ़ा। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया माशा अल्लाह बहुत अच्छा पढ़ा है।

एक बच्चे ने एक पेंटिंग बनाई थी जो उसने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में पेश की। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए अपनी अलैसल्लाह वाली अँगूठी उस के चेहरा पर लगाई और उसने हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथ को चूमा। इस की माता की ख़ुशी देखने वाली थी। भावनाओं से मग़लूब हो कर रो रही थीं। यह पेंटिंग एक व्यक्ति के स्केच पर आधारित थी। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए बच्चा को समझाया कि किसी इन्सान का स्केच नहीं बनाना। आगे से किसी जानवर का स्केच बनाया करो।

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

मैंने इस्लाम में आज तक किसी औरत के बारे में नहीं सुना कि इस का मेहर ऐसा इज़्ज़त योग्य हो जैसा कि उम्मे सुलेम रज़ि का मेहर था

हज़रत अबू तलहा रज़ि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में जिहाद की वजह से नफ़ली रोज़ा नहीं रखा करते थे ताकि ताक़त कम ना हो जाए।

और हज़रत अन्स रज़ि मज़ीद फ़रमाते हैं कि जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई तो मैंने सिवाए ईदुल फ़ित्र या ईदुल अज़्हा के दिन के कभी उनको रोज़ा के बिना नहीं देखा।

इख़लास तथा वफ़ा के पैकर बदरी सहाबी हज़रत अबू तलहा रज़ी अल्लाह अन्हो की मुबारक सीरत का वर्णन

अपने काम के माहिर, सलीक़ा और शौक़ के साथ बासठ साल के क़रीब वक़्फ़ ज़िन्दगी की रूह के साथ धर्म की सेवा की तौफ़ीक़ पाने वाले भूतपूर्व अस्सिटैंट प्राईवेट सैक्रेटरी (रब्वह) आदरणीय बाओ मुहम्मद लतीफ़ साहिब की वफ़ात

मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 31 जनवरी 2020 ई. स्थान - मस्जिद 'बैयतुल मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन सहाबी का मैं ज़िक्र करूँगा उनका नाम है हज़रत अबू तलहा रज़ि। हज़रत अबू तलहा अन्सारी रज़ि का असल नाम ज़ैद था। उनका सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज से था और यह क़बीले के नक़ीब थे। आप अपनी कुनिय्यत अबू तलहा के नाम से ज़्यादा मशहूर थे। हज़रत अबू तलहा रज़ि के पिता का नाम सहल बिन अस्वद और माता का नाम उबादा बिन्त मालिक था। हज़रत अबू तलहा रज़ि ने बैअत उक़बा सानिया में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर बैअत की तौफ़ीक़ पाई। आप जंग बदर और अन्य समस्त जंगों में भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। जब हज़रत अबू उबैदा बिन अलजराह रज़ि हिज्रत कर के मदीना तशरीफ़ लाए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको हज़रत अबू तलहा रज़ि के साथ भाई भाई बनाया। हज़रत अबू तलहा रज़ि का रंग गंदुमी और क़द दरमियाना था । आप ने कभी सिर और दाढ़ी के बालों पर ख़िज़ाब नहीं लगाया।(उसदुल ग़ाबह भाग 5 पृष्ठ 183-184 अबू तलहा रज़ि अन्सारी, भाग 2 पृष्ठ 150 ज़ैद बिन सहिल रज़ि दारुल फ़िक्र बेरूत लबनान 2003 ई)जिस तरह बाल थे वैसे ही रखे।

हज़रत अन्स रज़ि हज़रत अबू तलहा रज़ि के रबीब अर्थात बीवी के पहले पति से बेटे थे। हज़रत उम्मे सुलेम रज़ि के पहले पति मालिक बन नज़र थे। उनके फ़ौत होने के बाद हज़रत अबू तलहा रज़ि से उनकी शादी हुई जिससे उनके हाँ अबदुल्लाह और अबू अमीर का जन्म हुआ।

(अलइस्तेयाब फ़ी माअरफितल असहाब भाग 2 पृष्ठ 124 दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2010 ई)

(अत्तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 383 दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 1990 ई)

(उम्दतुल कारी शरह सही अल-बुख़ारी किताबुस्सिलात भाग 4 पृष्ठ 124 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2001 ई)

हज़रत अन्स रज़ि बयान करते हैं कि अबू तलहा ने उम्मे सुलेम को निकाह का पैग़ाम भिजवाया। उम्मे सुलेम रज़ि ने कहा कि अल्लाह की क़सम मुझे आप जैसे आदमी से निकाह का इनकार न होता लेकिन आप मुशरिक हैं और मैं मुस्लमान। यह सुनन निसाई की रिवायत है और में मुस्लमान औरत हूँ। मेरे लिए जायज़ नहीं है कि मैं आपसे निकाह करूँ। अगर आप इस्लाम क़बूल कर लें तो यही मेरा महर होगा और मैं इस के सिवा कुछ नहीं माँगूँगी। हज़रत अबू तलहा रज़ि ने इस्लाम क़बूल कर लिया और यही उनका मेहर निर्धारित हुआ। हज़रत साबित रज़ी अल्लाह तआला अन्हो कहा करते थे कि मैंने इस्लाम में आज तक किसी औरत के बारे में नहीं सुना कि इस का मेहर ऐसा सम्मान योग्य हो जैसा कि उम्मे सुलेम रज़ि का था।

(सुनन अन्निसाई किताबुन्निकाह बाब अत्तज़वीज अललइस्लाम हदीस 3341)

हज़रत अबू तलहा रज़ि जंग बदर में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल थे। हज़रत अबू तलहा रज़ि बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग बदर के दिन सरदाराने-क़ुरैश में से चौबीस आदमियों के बारे में हुक्म दिया और उन्हें बदर के कुओं में से एक नापाक कुँवें में डाल दिया गया और आपजब किसी क़ौम पर ग़ालिब आते तो मैदान में तीन रातें क़ियाम फ़रमाते। जब आप बदर में ठहरे और तीसरा दिन हुआ तो आप ने अपनी ऊंटनी पर कजावा बाँधने का हुक्म दिया और इस पर कजावा बाँधा गया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चले और आप के सहाबा भी आप के साथ चले और कहने लगे कि हम समझते हैं कि आप किसी उद्देश्य के लिए चले थे। आप इसी कुँवें की मुंडेर पर पहुंच कर खड़े हो गए जहां उन चौबीस आदमियों की लाशें डाली गई थीं। बन्द कुँआं था। आप उनके और उनके बापों के नाम लेकर पुकारने लगे कि हे अमुक, अमुक बेटे! हे अमुक, अमुक के बेटे क्या अब तुम को इस बात से ख़ुशी होगी कि तुमने अल्लाह और इस के रसूल की फ़रमांबरदारी की होती क्योंकि हमने तो सच सच पा लिया जो हमारे रब ने हमसे वादा किया था। आया तुमने भी वाक़ई वह पा लिया है जो तुम्हारे रब ने तुमसे वादा किया था? अबू तलहा रज़ि कहते थे कि हज़रत उमर रज़ि ने कहा हे रसूलुल्लाह !आप इन लाशों से क्या बातें कर रहे हैं जिनमें जान नहीं है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की है! कि तुम उनसे ज़्यादा इन बातों को नहीं सुन रहे जो मैं कह रहा हूँ अर्थात ये बातें अब अल्लाह तआला आगे उन तक पहुंचा भी रहा है कि क्या तुम्हारा बद-अंजाम हुआ।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब क़तल अबी जेहल हदीस 3976)

हज़रत अन्स रज़ि बयान करते हैं कि जब उहद की जंग हुई तो लोग शिकस्त खा कर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जुदा हो गए और हज़रत अबू तलहा रज़ि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने आप को अपनी ढाल से आड़ में लिए खड़े रहे। और हज़रत अबू तलहा रज़ि ऐसे तीर-अंदाज़ थे कि ज़ोर से कमान खींचा करते थे। उन्होंने उस दिन दो या तीन कमानें तोड़ें। अर्थात इतनी ज़ोर से खींचते थे कि कमान टूट जाती थी और जो कोई आदमी तीरों का तरकश अपने साथ लिए गुज़रता तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे फ़रमाते कि अबू तलहा रज़ि के लिए फेंक दो अर्थात कि दूसरों को भी नसीहत करते कि यह बहुत तीर-अंदाज़ हैं। अपने तीर भी उन्हीं को दे दो। यह उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने खड़े थे। हज़रत अन्स रज़ि कहते थे कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सिर उठा कर लोगों को देखते तो हज़रत अबू तलहा रज़ि कहते

بِأَبِيْ أَنْتَ وَأُمِّيْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، لَا يُصِيْبُكَ سَهْمٌ، نَحْرِيْ دُوْنَ نَحْرِكَ

मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान सिर उठा कर न देखें। शायद उन लोगों के तीरों में से कोई तीर आप को लगे। मेरा सीना आप के सीने के सामने है।

(उद्धरित अज़-सहीह अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब अज़ हम्मत ताइफ़तान मिनकुम इन तफ़शला ... हदीस 4064)

(उद्धरित अत्तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 384-385 दारुल कुतुब

अल्इल्मिया बेरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि बयान करते हैं कि हज़रत अबू तलहा रज़ि एक ही ढाल से नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त करते थे और हज़रत अबू तलहा रज़ि अच्छे तीर-अंदाज़ थे। जब वह तीर चलाते तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम झाँकते और उनके तीर पड़ने की जगह को देखते। यह बुख़ारी की रिवायत है। पहली भी बुख़ारी की थी।

(सही अलबुख़ारी किताबुल जिहाद वस्सैर बाबुल मजन वमन यतरस बतरस साहिबा हदीस 2902)

जंग उहद में हज़रत अबू तलहा रज़ि के इस शेअर के पढ़ने का भी ज़िक्र है कि

وَجْهِيْ لِوَجْهِكَ الْوِقَاءُ وَنَفْسِيْ لِنَفْسِكَ الْفِدَاءُ

मेरा चेहरा आप के चेहरे को बचाने के लिए है और मेरी जान आप की जान पर है।

(मस्नद अहमद बिन हनबल ,भाग 4 मस्नद अनस बिन मालिक हदीस 13781आलेमुल कुतुब बेरूत लबनान 1998 ई)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू तलहा रज़ि से फ़रमाया कि अपने लड़कों में से मेरे लिए कोई लड़का तलाश करो जो मेरी ख़िदमत करे ताकि में ख़ैबर का सफ़र करूँ। हज़रत अबू तलहा रज़ि सवारी पर मुझे अर्थात हज़रत अन्स रज़ि को पीछे बिठा कर ले गए। हज़रत अन्स रज़ि कहते हैं मैं इस वक़्त लड़का था और बलूग़त के क़रीब पहुंच चुका था। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत किया करता था। जब आप उतरते मैं अक्सर आप को यह दुआ मांगते सुना करता था कि

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ

हे मेरे अल्लाह मैं तेरी पनाह लेता हूँ ग़म तथा दुख से दरमांदगी और सुस्ती से और कंजूसी और बुज़दिली से और क़र्ज़दारी के बोझ से और लोगों की सख़्ती से।

(सही अलबुख़ारी किताबुल जिहाद हदीस 2893)

एक दूसरी रिवायत में इस तरह भी आया है। यह हज़रत अन्स रज़ि की रिवायत है। पहली भी बुख़ारी की थी और यह भी बुख़ारी की ही है । हज़रत अनस बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना में आए। आप का कोई ख़ादिम ना था। हज़रत अबू तलहा रज़ि ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गए और अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह यह अनस समझदार लड़का है। यह आप की ख़िदमत करेगा। हज़रत अन्स रज़ि कहते थे अत: मैंने सफ़र में भी आप की ख़िदमत की और ठहराव में भी। जो काम भी मैं करता आप मुझे कभी न फ़रमाते तू ने यह काम इस तरह क्यों किया और जो काम मैंने न किया होता उस के बारे में आप मुझे कभी न फ़रमाते कि तुमने उस को इस तरह क्यों नहीं किया अर्थात कभी कोई रोक-टोक नहीं की।

(सही बुख़ारी किताबुल वसाया हदीस 2768)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाह तआला अन्हो बयान करते हैं कि हम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे जब आप असफ़ान (असफ़ान मक्का और मदीना के मध्य एक जगह का नाम है। वहां से लौटे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस वक़्त अपनी ऊंटनी पर सवार थे और आप ने हज़रत सफिया बिन्त हुय्य को पीछे बिठाया हुआ था। आप की ऊंटनी ने ठोकर खाई और दोनों गिर पड़े। हज़रत अबू तलहा रज़ि यह देखकर फ़ौरन ऊंट से कूदे और बोले हे रसूलुल्लाह! मैं आप पर क़ुर्बान। आप ने फ़रमाया पहले औरत की ख़बर लू। हज़रत अबू तलहा रज़ि ने अपने मुँह पर कपड़ा डाल लिया और हज़रत सफ़ीया रज़ि के पास आए और वह कपड़ा उन पर डाला अर्थात उनको पर्दे का इतना लिहाज़ था और इन दोनों की सवारी दरुस्त की जिस पर वह सवार हो गए और हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गर्द हलक़ा बना लिया। जब हम मदीने की बुलंदी पर पहुंचे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया कि

آيِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ

हम लौट कर आने वाले हैं। हम अपने रब के हुज़ूर तौबा करने वाले हैं। अपने रब की इबादत करने वाले और अपने रब की प्रशंसा करने वाले हैं।

आप उस वक़्त तक कि मदीने में दाख़िल हुए यही कलिमात फ़रमाते रहे।

(सही अलबुख़ारी किताबुल जिहाद हदीस 3085)

(लुग़ातुल हदीस भाग 3 पृष्ठ 172 लेखक अल्लामा वहीदुज़्ज़मा नौमानी कुतुब ख़ाना लाहौर 2005 ई)

हज़रत मुसलेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो इस घटना का ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं कि

''एक बार जबकि आप जंग ख़ैबर से वापस तशरीफ़ ला रहे थे और आप की बीवी हज़रत सफिया रज़ी अल्लाह अन्हा भी आप के साथ थीं तो रास्ते में ऊंट बिदक गया और आप और हज़रत सफ़ीहा रज़ि दोनों गिर गए। हज़रत अबू तलहा अन्सारी रज़ि का ऊंट आप के पीछे ही था। वह फ़ौरन अपने ऊंट से कूद कर आप की तरफ़ गए और कहने लगे हे रसूलुल्लाह मेरी जान आप पर क़ुर्बान आप को कोई चोट तो नहीं आई? जब अबू तलहा रज़ि आप के पास पहुंचे तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू तलहा!पहले औरत की तरफ़, पहले औरत की तरफ़।' दो बार फ़रमाया "वह तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक़ थे।' हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि हज़रत तलहा रज़ि तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक़ थे "जब आप की जान का सवाल हो तो उस वक़्त उन्हें कोई और कैसे नज़र आ सकता था मगर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जाओ और पहले औरत को उठाओ।'

(उस्वा हस्न: अनवारुल उलूम भाग 17 पृष्ठ 126-127)

यह घटना आप ने इस वक़्त वर्णन फ़रमाई जब आप औरत के हुक़ूक़ के बारे में वर्णन फ़र्मा रहे थे।

हज़रत अन्स रज़ि बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ैबर पर हमला किया और हमने उस के क़रीब जा कर सुबह की नमाज़ पढ़ी जबकि अभी अंधेरा ही था। फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सवार हुए और हज़रत अबू तलहा रज़ि भी सवार हुए और मैं हज़रत अबू तलहा रज़ि के साथ पीछे सवार था। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ैबर की गली में घोड़ा दौड़ाया और मेरा घुटना नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रान के साथ छू रहा था। दोनों इतने क़रीब क़रीब थे और फिर आप ने गर्मी की वजह से या वैसे आराम की वजह से अपनी रान से अपना तह बंद हटाया अर्थात टांग से, घुटने से ज़रा ऊपर किया तो कहते हैं यहां तक कि मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रान की सफ़ेदी देखी। रान से मुराद यहां घुटने से ऊपर का हिस्सा है। जब आप गांव में दाख़िल हुए और फ़र्माया

اَللّٰهُ أَكْبَرُ خَرِبَتْ خَيْبَرُ إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ

अल्लाह ही सबसे बड़ा है। ख़ैबर वीरान हो गया हम जब किसी क़ौम के आँगन में डेरा डालते हैं तो फिर उन लोगों की सुबह बुरी होती है जिनको समय से पहले अज़ाब इलाही से डराया गया हो।

यह आप ने तीन बार फ़रमाया

हज़रत अन्स रज़ि कहते थे कि लोग अपने कामों के लिए बाहर निकले तो उन्होंने कहा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अब्दुल अज़ीज़ कहते थे कि हमारे कुछ साथियों ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्म के साथ ख़मीस का लफ़्ज़ भी कहा था अर्थात फ़ौज। हज़रत अन्स रज़ि कहते थे कि हमने उसे लड़ कर फ़तह किया और क़ैदियों को इकट्ठा किया गया तो हज़रत दहिय कलबी रज़ि आए और कहा हे अल्लाह के नबी मुझे उन क़ैदीयों में से एक लौंडी दीजाए। आप ने फ़रमाया जाओ और एक लड़की ले लू। उन्होंने हुय्य की बेटी सफिया ली। इस पर एक शख़्स नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और कहा हे अल्लाह के नबी ! आप ने दहिय को क़ुरैज़ा और नज़ीर की सरदार सफिया बिन्त हुय्ये दी है। वह तो सिर्फ आप ही के लायक़ है। आप ने फ़रमाया इसे सफ़ीया रज़ि के साथ बुला लाओ। वह सफिया रज़ि को ले आए और हज़रत दहीहया रज़ि भी साथ थे। आप ने हज़रत दहीह रज़ि को फ़रमाया कि इन क़ैदीयों में से कोई और तुम ले लू। हज़रत अन्स रज़ि कहते थे कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सफिया रज़ि को आज़ाद कर दिया और फिर उनसे शादी की। इस पर हज़रत साबित रज़ि ने हज़रत अन्स रज़ि से पूछा कि हमज़ा! आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे क्या मेहर दिया था? उन्होंने कहा कि आप ने उनको आज़ाद कर दिया था और उनसे शादी कर ली और उनकी आज़ादी ही उनका मेहर था। आख़िर जब आप अभी रास्ते में ही थे तो हज़रत उम्मे सुलीम रज़ि ने हज़रत सफिया रज़ि को आप के लिए तैय्यार किया और फिर वहां शादी हुई। वहां आप के पास भेज दिया और फिर उस के बाद कहते हैं अगले दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसके पास कोई चीज़ हो वह उसे ले आए और आप ने चमड़े का दस्तर ख़्वान बिछा दिया। कोई शख़्स खजूरें लाने लगा, कोई घी। अब्दुल अज़ीज़ ने कहा कि मेरा

ख़्याल है कि उन्होंने सत्तू का भी ज़िक्र किया था। कहते थे फिर उन्होंने इन सबको आपस में मिला कर गूँध दिया और यही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वलीमे की दावत थी।

(सही अलबुख़ारी किताबस्सलात बाब मा यज़्कर फ़ी अलफ़ख़ज़ हदीस 371)

एक दूसरी रिवायत में इस तरह भी आता है कि क़िला की फ़तह के बाद हज़रत सफिया रज़ि दहीह रज़ि के हिस्सा में आईं। सहाबा किराम रज़ि ने, बहुत सारे सहाबी, एक सहाबी नहीं काफ़ी लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आकर उनकी प्रशंसा करनी शुरू की और यह भी कहा कि मान सम्मान की दृष्टि से हज़रत सफिया रज़ि के लिए यह ज़्यादा उचित है कि आप अपने लिए उन्हें चुन लें। आप उनसे शादी करें। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत दहीह रज़ि के पास पैग़ाम भेजा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सात ग़ुलामों के बदला हज़रत सफिया रज़ि को ख़रीद कर उन्हें उम्मे सुलेम रज़ि के हवाले किया ताकि वह उन्हें अपने साथ रखें। फिर जैसा कि पहले ज़िक्र हो चुका है कि आप ने फिर उनसे शादी कर ली।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने साद भाग 8 पृष्ठ 97-98 दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस दिन अर्थात हुनैन के दिन फ़रमाया कि जो शख़्स किसी काफ़िर को क़तल करेगा तो इस काफ़िर का माल तथा सामान उसी शख़्स को मिलेगा। इस दिन हज़रत अबू तलहा रज़ि ने बीस काफ़िरों को क़तल किया और उनका सामान भी लिया और हज़रत अबू तलहा रज़ि ने हज़रत उम्मे सुलेम रज़ि को देखा कि उनके पास एक ख़ंजर है। उन्होंने पूछा हे उम्मे सुलेम रज़ि यह किया है? उन्होंने कहा अल्लाह की क़सम मेरा इरादा यह है कि अगर कोई काफ़िर मेरे क़रीब आए तो मैं इस ख़ंजर से इस का पेट फाड़ दूं। हज़रत अबू तलहा रज़ि ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह बात बताई । यह सुन्न अबू दाऊद की है।

(सुन्न अबू दाऊद किताबुल जिहाद हदीस 2718)

हज़रत अन्स रज़ि रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि लश्कर में तन्हा अबू तलहा रज़ि की आवाज़ एक जमाअत पर भारी होती है। कुछ दूसरी रिवायत में एक जमाअत की बजाय मेउतु रजुल अर्थात एक सौ आदमियों और अलफ रजुल अर्थात एक हज़ार आदमी का भी ज़िक्र मिलता है कि उनकी इतनी बुलंद थी।

(मस्नद अहमद बिन हनबल ,भाग 4 पृष्ठ 286 मस्नद अनस बिन मालिक हदीस 12119 आलेमुल कुतुब बेरूत लबनान 1998 ई)

(अलइस्तेयाब फ़ी माअरफितल असहाब भाग 4 पृष्ठ 261 दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2010 ई)

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 383 दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत अबू तलहा रज़ि 34 हिज्री में मदीने में फ़ौत हुए और हज़रत उसमान रज़ि ने आप की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। इस वक़्त आप की उम्र सत्तर साल थी जबकि अहल बस्रा के निकट आप की वफ़ात एक समुंद्री सफ़र के दौरान हुई और एक द्वीप में आपको दफ़न किया गया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 385 दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत अन्स रज़ि बयान करते हैं कि हज़रत अबू तलहा रज़ि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में जिहाद की वजह से नफ़्ली रोज़ा नहीं रखा करते थे ताकि ताक़त कम ना हो जाए और हज़रत अन्स रज़ि और अधिक फ़रमाते हैं कि जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई तो मैंने सिवाए ईदुल फ़ित्र या ईदुल अज़्हा के दिन के कभी उनको बिना रोज़ा के नहीं देखा। इस के बाद फिर बाक़ायदगी से रोज़े रखने लग गए।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल जिहाद हदीस 2828)

हज़रत अबू तलहा रज़ि की मेहमान-नवाज़ी की एक घटना यूं मिलती है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि से रिवायत है कि एक शख़्स नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया। आप ने अपनी पत्नी की तरफ़ किसी को भेजा। उन्होंने जवाब दिया हमारे पास सिवाए पानी के और कुछ नहीं है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस मेहमान को कौन अपने साथ रखेगा या फ़रमाया उसे कौन मेहमान ठहराएगा? अन्सार में से एक शख़्स बोला मैं। अत: वह उसे अपने साथ लेकर अपनी बीवी के पास गया और कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मेहमान की निहायत अच्छी मेहमानी करो। वह बोली हमारे पास तो कुछ भी नहीं मगर इतना ही खाना है जो मेरे बच्चों के लिए मुश्किल से काफ़ी हो। उसने कहा अपने इस खाने को तैयार कर लो और चिराग़ भी जलाओ और अपने बच्चों को जब वह शाम का खाना मांगें सुला देना। अत: इस ने अपना खाना तैयार किया और चिराग़ को जलाया। फिर अपने बच्चों को सुला दिया। इस के बाद वह उठी जैसे चिराग़ दुरुस्त करते हैं तो उसने उस को बुझा दिया। वे दोनों इस मेहमान पर यह ज़ाहिर करते रहे कि मानो वह भी खा रहे हैं मगर इन दोनों ने ख़ाली पेट रात गुज़ारी। जब सुबह हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गया। आप ने फ़रमाया आज रात अल्लाह हंस पड़ा या फ़रमाया तुम्हारे दोनों के काम से बहुत ख़ुश हुआ और अल्लाह ने यह वह्य की कि

وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (अल-हशर 10)

और वे ख़ुद अपनी जानों पर दूसरों को तर्जीह देते थे बावजूद उस के कि उन्हें ख़ुद तंगी थी। अत: जो कोई भी नफ़स की कंजूसी से बचाया जाए तो यही वे लोग हैं जो कामयाब होने वाले हैं

(सही अलबुख़ारी किताबुल मनाक़िब अल-अनसार... हदीस3798)

(उम्दतुल कारी शरह सही अलबुख़ारी किताबुल मनाक़िब अल-अनसार भाग 16 पृष्ठ 364 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2001 ई)

हज़रत अन्स रज़ि बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार जब बाल उतरवाए तो हज़रत अबू तलहा रज़ि पहले शख़्स थे जिन्हों ने आप के बालों में से कुछ बाल लिए।

(सही अलबुख़ारी किताबुल वुज़ू बाब अलमा अल्लज़ी युग़सेलो बेह शेअरुल इनसान हदीस 171)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि ने बयान किया कि हज़रत अबू तलहा रज़ि ने हज़रत उम्मे सुलेम रज़ि से कहा। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आवाज़ कमज़ोर सुनी है। मैं समझता हूँ कि आप को भूख है। क्या तुम्हारे पास कुछ खाने की चीज़ है? हज़रत उम्मे सुलेम रज़ि ने कहा हाँ। यह कह कर जौ की कुछ रोटियाँ निकाल लाईं। फिर उन्होंने अपनी एक ओढ़नी निकाली। उन्होंने रोटियों को इस के एक किनारे में लपेट दिया और वह मेरे हाथ में दे दीं और ओढ़नी का कुछ हिस्सा मेरे बदन पर लपेट दिया। फिर उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ मुझे भेजा। हज़रत अन्स रज़ि कहते थे कि मैं वह लेकर चला गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मस्जिद में पाया। आप के साथ कुछ लोग थे। मैं पास खड़ा हो गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे फ़रमाया क्या अबू तलहा रज़ि ने तुझे भेजा है ? मैंने कहा जी हाँ। आप ने फ़रमाया कि खाना देकर भेजा है? मैंने कहा जी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन लोगों से कहा जो आप के पास थे कि चलो उटो। बजाय वह खाना लेने के आप ने उनको भी साथ लिया। वह खाना लेकर ही आप चल पड़े और मैं आप के आगे ही चल पड़ा और हज़रत अबू तलहा रज़ि के पास पहुंचा और उनको बताया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो उधर ही आ रहे हैं। हज़रत अबू तलहा रज़ि कहने लगे कि उम्मे-सुलेम! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों को ले आए हैं और हमारे पास इतना खाना नहीं जो उन को खिलाईं। कुछ रोटियाँ थीं वे तो भेज दी थीं। वही वापस आ रही हैं। वह बोलीं अल्लाह और इस का रसूल बेहतर जानते हैं । हज़रत अबू तलहा रज़ि गए और जा कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिले। फिर आप जल्दी जल्दी घर से गए। हज़रत अन्स रज़ि पहले पहुंच गए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आए। हज़रत अबू तलहा रज़ि आप के साथ थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उम्मे सुलेम!जो तुम्हारे पास है वह ले आओ। वे रोटियाँ ले आईं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके बारे में फ़रमाया तोड़ो उनको। वे तोड़ी गईं। हज़रत उम्मे सुलेम रज़ि ने घी की एक कुप्पी निचोड़ी और इस को बतौर सालन उनके सामने पेश किया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन रोटियों पर दुआ की जो दुआ अल्लाह ने चाही कि करें। फिर आप ने फ़रमाया कि दस आदमियों को अंदर आने की इजाज़त दो। उनको इजाज़त दी और लोगों ने इतना खाया कि उन का पेट भर गए और फिर बाहर चले गए। फिर आप ने फ़रमाया दस और आदमियों को इजाज़त दो। उनको इजाज़त दी और लोगों ने इतना खाया कि उन का पेट भर गए और बाहर चले गए। फिर आप ने फ़रमाया दस और आदमियों को इजाज़त दो।

उनको इजाज़त दी और उन्होंने इतना खाया कि उनके पेट भर गए। वे बाहर चले गए। फिर आप ने फ़रमाया दस और आदमियों को इजाज़त दो। उनको इजाज़त दी और लोगों ने इतना खाना खाया कि उन के पेट भर गए और बाहर चले गए। अत: इन सब लोगों ने खाया और पेट भर कर खाया और वे लोग सत्तर या अस्सी थे।

(सही अलबुख़ारी किताबुल मनाकिब बाब अलामातुन्नबुवत फिल इस्लाम हदीस 3578)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ की बरकत का भी यहां ज़िक्र मिलता है। यही वह रिवायत है

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि बयान करते हैं कि अबू तलहा मदीने में समस्त अन्सारियों से ख़जूरों के ज़्यादा बाग़ रखते थे और उनको सबसे ज़्यादा प्यारी जायदाद बेअरे हाअ का बाग़ था जो मस्जिद के सामने था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस में आया करते थे और वहां का साफ़ सुथरा पानी पिया करते थे। हज़रत अन्स रज़ि कहते थे कि जब यह आयत उतरी कि

لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ (आले इम्रान 93)

तुम हरगिज़ नेकी को पा नहीं सकोगे यहां तक कि तुम इन चीज़ों में से ख़र्च करो जिनसे तुम मुहब्बत करते हो। हज़रत अबू तलहा रज़ि खड़े हो गए और कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला फ़रमाता है कि لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ तुम हरगिज़ नेकी को पा नहीं सकोगे यहां तक कि तुम इन चीज़ों में से ख़र्च करो जिनसे तुम मुहब्बत करते हो और मेरी जायदाद में से मुझे सबसे प्यारा बाग़ बेअरे हा है और वह अल्लाह के लिए सदक़ा है। अब मैं अल्लाह के लिए सदक़ा देता हूँ। मैं उम्मीद करता हूँ कि अल्लाह के यहाँ मक़बूल नेकी होगी और बतौर ज़ख़ीरे के होगी। इसलिए जहां अल्लाह तआला आप को समझाए वहां उसे ख़र्च करें। आप ने फ़रमाया शाबाश यह फ़ायदा देने वाला माल है या फ़रमाया हमेशा रहने वाला माल है। आप ने फ़रमाया कि तुमने कहा है मैंने सुन लिया है। मैं मुनासिब समझता हूँ कि तुम उसे अपने क़रीबियों में ही बांट दो। अबू तलहा रज़ि ने कहा हे रसूलुल्लाह! हज़ूर के इरशाद के अनुपालन में ऐसे ही किए देता हूँ। अत: अबू तलहा रज़ि ने इस बाग़ को अपने क़रीबियों और अपने चाचा के बेटों में बांट दिया।

(सही अलबुख़ारी किताबुल वसाया ....हदीस 2769)

हज़रत अबू तलहा रज़ि को यह सम्मान और सआदत भी हासिल है कि वह आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक बेटी की वफ़ात पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद पर इस की क़ब्र में उतरे और हज़ूर की साहबज़ादी की मुबारक लाश को क़ब्र में उतारा।

(उद्धरित अज़सहीह अलबुख़ारी किताबुल जनायज़ ... हदीस1285)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि बयान करते हैं कि एक-बार मदीना वाले अचानक घबरा गए। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू तलहा रज़ि के घोड़े पर सवार हुए जो धीरे चलता था या यह कहा कि जिसकी रफ़्तार सुस्त थी। जब आप लौटे तो आप ने हज़रत अबू तलहा रज़ि को फ़रमाया कि हमने तो तुम्हारे घोड़े को एक दरिया पाया है। बहुत तेज़ चलता है। इस के बाद इस घोड़े का चलने में कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता था।

(सही अलबुख़ारी किताबुल जिहाद ....हदीस 2867)

हज़रत अनस बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमसे मिल-जुल जाते थे। मेरे छोटे भाई से मज़ाक़ में फ़रमाते कि हे अबू उमैर नुग़ैर ने क्या किया? अबू उमैर ने एक चिड़िया पाली हुई थी। नुग़ैर चिड़िया को कहते हैं। वह मर गई तो उनको उस का बड़ा सदमा था। वह या उड़ गई या मर गई। तो बहरहाल मज़ाक़ में उसे यह फ़रमाते थे। इस की वजह से इस बच्चे को छेड़ते थे। अक्सर ऐसा होता कि नमाज़ का वक़्त हो जाता और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे घर में होते तो आप उस बिस्तर को बिछाने का हुक्म फ़रमाते जिस पर आप तशरीफ़ फ़र्मा होते। अत: हम इस को बिछाते और साफ़ करते। फिर आप नमाज़ के लिए खड़े होते और हम आप के पीछे खड़े हो कर नमाज़ करते।

(सुनन इबन माजा किताबुल अदब ....हदीस 3720)

(सही अलबुख़ारी किताबुल अदब हदीस 6203)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि बयान करते हैं कि जब अब्दुल्लाह बिन अबू तलहा अन्सारी रज़ि का जन्म हुआ। उनके भाई की, अबू तलहा रज़ि के बेटे की जो उनकी माँ की तरफ़ से भाई थे तो मैं उसे लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी चादर ओढ़े हुए थे और अपने ऊंट को तारकौल लगा रहे थे। आप ने फ़रमाया क्या तुम्हारे पास खजूर है? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ। मैंने कुछ खजूरें आपकी ख़िदमत में पेश कीं जिन्हें आप ने मुँह में डाला और फिर उन्हें अच्छी तरह चबाया। फिर बच्चे का मुँह खोला और उसे बच्चे के मुँह में डाला तो वह बच्चा उसे चूसने लगा। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अन्सार की खजूर से मुहब्बत। अरतात बच्चे को भी यह पसंद आई और आप ने इस बच्चे का नाम अब्दुल्लाह रखा।

(सही मुस्लिम किताबुल अदाब ..... हदीस 2144)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि बयान करते हैं कि हज़रत अबू तलहा रज़ि का एक बेटा बीमार था। हज़रत अबू तलहा बाहर गए तो बच्चे की वफ़ात हो गई। जब हज़रत अबू तलहा रज़ि वापिस लौटे तो उन्होंने बीवी से पूछा :बेटे का क्या हाल है? हज़रत उम्मे सुलेम रज़ि ने कहा कि पहले से ज़्यादा आरम में है। फिर उन्होंने रात का खाना पेश किया। उन्होंने खाया। रात गुज़ारी और फिर बताया कि बच्चे की वफ़ात हो गई है इस को जा के दफ़ना आओ। अत: सुबह हज़रत अबू तलहा रज़ि ने यह बात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ की। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें औलाद की दुआ दी और इस के बाद फिर उनके हाँ बेटा पैदा हुआ ।

(सही मुस्लिम किताबुल आदाब ...... हदीस 2144)

हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने इस घटना का यूं वर्णन फ़रमाया है कि मोमिन के लिए जान की क़ुर्बानी पेश करना वास्तव में चीज़ ही कोई नहीं है। फिर आप फ़रमाते हैं कि ग़ालिब के बारे में लोग बहसें करते हैं कि वह शराब पिया करता था या नहीं पिया करता था मगर आप फ़रमाते हैं मेरा तो वह रिश्तेदार है और मैंने अपनी नानीयों और फूफियों से सुना हुआ है कि वह शराब पीता था। तो ऐसा शख़्स जो शराब का आदी था वह भी है कहता है

जान दी दी हुई उसी की थी
हक़ तो यह है कि हक़ अदा न हुआ

अर्थात अगर हम ख़ुदा तआला की राह में जान देते हैं तो क्या हुआ। यह जान भी तो उसी की दी हुई थी। अत: ख़ुदा तआला के हुक्म के अनुपालन में अगर कोई शख़्स जान भी दे देता है तो वह कोई बड़ी क़ुर्बानी नहीं करता क्योंकि वह जान भी इसी की चीज़ है और किसी की अमानत को वापस कर देना बड़ी क़ुर्बानी नहीं होता। आप फ़रमाते हैं कि हदीसों में एक सहाबिया उम सुलेम रज़ि की ही यह घटना आती है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस के पती अबू तलहा रज़ि को किसी इस्लामी ख़िदमत के सिलसिला में बाहर भेजा। उनका बच्चा बीमार था और उन को अपने बच्चे की बीमारी का क़ुदरती तौर पर फ़िक्र था। वह सहाबी रज़ि जब वापस आए तो उनकी गैरहाज़िरी में उनका बच्चा फ़ौत हो चुका था। माँ ने अपने मुर्दा बच्चे पर कपड़ा डाल दिया। वह नहाई, धोई और ख़ुशबू लगाई और बड़े हौसले के साथ उसने अपने पति का स्वागत किया। वह सहाबी रज़ि जब घर आए तो उन्होंने आते ही सवाल किया कि बच्चे का क्या हाल है? इस सहाबीया रज़ि ने जवाब दिया बिलकुल आराम से है। उन्होंने खाना खाया। फिर तसल्ली के साथ आराम से लेट गए और अपनी पत्नी से सम्बन्ध भी पूरे किए। जब वह अपनी बीवी से मिल चुके तो बीवी ने कहा कि मैं आपसे एक बात पूछना चाहती हूँ। पति ने जवाब दिया क्या? बीवी ने कहा कि अगर कोई शख़्स किसी के पास अमानत रख जाए और कुछ समय के बाद वह चीज़ वापस लेना चाहे तो क्या वह चीज़ उसे वापस की जाए या ना की जाए? उन्होंने जवाब दिया वह कौन बेवक़ूफ़ होगा जो किसी की अमानत को वापस नहीं करेगा। बीवी ने कहा आख़िर उसे अफ़सोस तो होगा कि मैं अमानत वापस कर रहा हूँ। उन्होंने जवाब दिया अफ़सोस किस बात का? वह चीज़ उस की अपनी नहीं थी। अगर वह उसे वापस कर दे तो उसे क्या अफ़सोस हो सकता है। बीवी ने कहा अच्छा अगर यह बात है तो हमारा बच्चा जो ख़ुदा तआला की एक अमानत थी उसे ख़ुदा तआला ने हमसे वापस ले लिया। और यह हौसला था जो उस वक़्त की औरतों में पाया जाता था। अत: जान का देना तो कोई चीज़ ही नहीं विशेष रूप से मोमिन के लिए तो यह एक मामूली बात होती है

(उद्धरित तक़रीर जलसा सालाना जमाअत अहमदिया लाहौर 1948 ई, अनवारुल उलूम भाग 21 पृष्ठ 53-54)

फिर जो हदीस पहले वर्णन हो चुकी है इस के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको यह दुआ दी बाद में उनके बच्चे पैदा हुए। फ़ौरी तौर पर कुछ समय बाद उन का बेटा पैदा हुआ और फिर इतना नवाज़ा अल्लाह तआला ने

कि अन्सार में से एक शख़्स ने रिवायत की है कि मैंने हज़रत अबू तलहा के नौ बच्चे देखे और वह सब नौ लड़के क़ुरआन के क़ारी थे।

(सही अलबुख़ारी किताबुल जनायज़............ हदीस 1301)

आसिम अहवल बयान करते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्याला हज़रत अन्स रज़ि के पास देखा। इस में दराड़ पड़ गई थी। हज़रत अन्स रज़ि ने उसे चांदी से जोड़ दिया था। वह एक ख़ूबसूरत चौड़ा और उम्दा लक्कड़ी का बना हुआ प्याला था। हज़रत अन्स रज़ि ने बताया कि मैं ने इस प्याले में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कई बार पानी पिलाया है। इब्न सीरीन कहते हैं कि वह प्याला लोहे की तार से जुड़ा हुआ था। हज़रत अनस ने इरादा किया कि इस की जगह सोने या चांदी से जुड़वा दें लेकिन हज़रत अबू तलहा रज़ि ने उनसे कहा कि जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनाया है इस में हरगिज़ कोई तबदीली न करो। अत: उन्होंने इरादा छोड़ दिया।

(सही अलबुख़ारी किताबुल शरबा......... हदीस 5638)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि वर्णन करते हैं कि मैं हज़रत अबू तलहा अन्सारी रज़ि , हज़रत अबू उबैदा बिन अलजराह रज़ि और हज़रत उबी बिन कअब रज़ि को खजूर की शराब पिला रहा था कि इतने में एक आने वाले शख़्स ने आकर ख़बर दी कि शराब हराम कर दी गई है। हज़रत अबू तलहा रज़ि ने इस शख़्स की ख़बर सुनते ही कहा कि अनस! इन मटकों को तोड़ दो। हज़रत अन्स रज़ि कहते हैं कि मैंने मटकों के निचले हिस्सों पर एक पत्थर से मार के उन्हें तोड़ दिया।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल अहाद.................... हदीस 7253)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि वर्णन करते हैं कि जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहान्त हुआ तो मदीने में एक आदमी था जो लहद (कब्र) बनाता था और एक दूसरा था जो सीधी क़ब्र बनाता था। सहाब रज़ि ने कहा कि हम अपने रब से इस्तिख़ारा करते हैं और दोनों को बुला भेजते हैं। दोनों में से जो बाद में आएगा उस को हम छोड़ देंगे। अर्थात जो पहले आएगा इस से काम करवा लेंगे। अत: दोनों की तरफ़ पैग़ाम भेजा गया तो लहद वाला पहले आया इस पर सहाबा रज़ि ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लहद बनाई। इस की शरह में अल्लामा बू सैरी ने लिखा है कि लहद वाली क़ब्र बनाने वाले हज़रत अबू तलहा रज़ि थे और सीधी क़ब्र बनाने वाले हज़रत अबू उबैदा बिन अलजराह रज़ि थे। (सुनन इबन माजा किताबुल जनायज़ ..हदीस: 1557)(शरह सुनन इब्न माजा भाग 1 किताबुल जनायज़ .....पृष्ठ 617 बैयतुलत उरदन 2007 ई यह उनका सम्पूर्ण वर्णन है।

अब एक मुख़्तसर ज़िक्र मैं एक मरहूम का करूँगा और नमाज़ के बाद उन का जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा। आदरणीय बाओ मुहम्मद लतीफ़ साहिब अमृतसरी इब्न हज़रत मियां नूर मुहम्मद साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम। उनका देहान्त 26 जनवरी 2020 ई को रब्वह में 90 वे साल की उम्र में हुआ है। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना लिल्लाहे राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मरहूम मूसी थे। आप सिलसिले के प्रसिद्ध मुबल्लिग़ मुहतरम मौलाना मुहम्मद सिद्दीक़ अमृतसरी साहिब के छोटे भाई थे। बाओ लतीफ़ साहिब के पिता मुहतरम मियां नूर मुहम्मद साहब रज़ि सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम थे। वह शुरू जवानी में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि की सेवा में बाओ लतीफ़ साहिब को लेकर गए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि की ख़िदमत में जवानी में ही वक़्फ़ के लिए पेश किया। हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ि ने उन्हें कहा कि आपके दो बेटे हैं। पहले एक बेटा मुरब्बी हो के वक़्फ़ ज़िन्दगी है। यह भी सारी उम्र वक़्फ़ ज़िन्दगी की तरह ही काम करेगा। अत: उन्होंने वक़्फ़ की तरह ही काम किया। आपको साढ़े चार साल बतौर क्लर्क रेलवे विभाग में नोकरी की अक्तूबर 1952 ई में आपने अपने आपको बतौर सिलसिले का काम करने वाले के ख़िदमत के लिए पेश किया।1952 ई से ख़िदमत सिलसिला की तौफ़ीक़ मिली और आरम्भिक तक़र्रुर नज़ारत बैयतुल माल में हुआ। फिर 1954 ई में दफ़्तर रोज़नामा अलफ़ज़ल में तबादला हुआ। 1961 ई में आपकी डयूटी बतौर मुहर्रिर प्राईवेट सैक्रेटरी के दफ़्तर में हुई। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि के दौरे ख़िलाफ़त के आख़िरी तीन साल प्राईवेट सैक्रेटरी के दफ़्तर में, फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस के दौरे ख़िलाफ़त में, फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबा की हिज्रत के बाद भी रब्वह में दफ़्तर पी ऐस स्थापित रहा और अभी तक वहां है। 2014 ई तक यहां उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। और 1985 ई में उनको अस्सिटैंट प्राईवेट सैक्रेटरी की ख़िदमत दी गई और बड़ी ख़ुश-उस्लूबी से उन्होंने अपने यह फ़राइज़ अंजाम दिए। उनका कुल ख़िदमत का समय 62 साल बनता है जिसमें से तक़रीबन 53 साल उनको दफ़्तर प्राईवेट सैक्रेटरी में विभिन्न हैसियत से ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली।

अपने काम के बहुत माहिर थे। बड़े सलीक़ा और शौक़ से काम किया करते थे और साथ साथ दीनी अध्ययन का भी शौक़ था। सिलसिला की किताबों का गहरा अध्ययन था। शूरा के इंतिज़ामात के सिलसिला में उनको खासतौर पर ख़िलाफ़त साल्सा के दौर में भी और बाद में भी बहुत ज़्यादा ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। प्राई-वेट सैक्रेटरी के ज़िम्मा मुख़्तलिफ़ कामों की अंजाम देने के के सिलसिले में ख़रीदने के हवाले से भी बड़ी बारीकी से और बड़ी मेहनत से जमाअत के मालों की हिफ़ाज़त का ख़ास ख़्याल रखते हुए चीज़ें ख़रीदा करते थे। पाकिस्तान बनने के बाद उनको हिफ़ाज़त मर्कज़ कादियान की भी तौफ़ीक़ मिली। कुछ समय यह वहां रहे। उनकी पाँच बेटियां और एक बेटा था। उनकी वफ़ात से कुछ दिन पहले उनकी एक बेटी भी वफ़ात पा गई थीं जो ज़रीफ़ अहमद क़मर साहिब की पत्नी थीं। उनका एक बेटा है जो मुरब्बी भी है। लंदन में ही तीन बेटियां हैं और एक बेटा अतीक़ अहमद वह भी यहीं काम कर रहा है

दफ़्तर प्राईवेट सैक्रेटरी के काम करने वाला राना मुबारक साहिब हैं। कहते हैं कि मैंने बत्तीस साल उनके साथ काम किया और लम्बा समय तक मज्लिस मुशावरत के इंतिज़ामों के सिलसिला में बहुत सा दफ़्तरी काम अकेले ही करते रहे और यह कहते हैं कि यह नसीहत किया करते थे कि जब भी दुनियावी मुश्किलें और परेशानियाँ हों तो दुआ के साथ साथ अपने दफ़्तरी काम में ज़्यादा डूब जाओ तो अल्लाह तआला परेशानियाँ दूर कर देता है। कारकुनों से भी ग़लती हो जाती तो बड़े प्यार से समझा दिया करते थे। इसी तरह दूसरे कारकुनों ने भी यही लिखा है कि बहुत मेहनत से काम करने वाले थे। कारकुनों की रहनुमाई करते थे। अंजुमन के क़वाइद पर आपको बड़ी पकड़ थी। तहरीर भी बहुत अच्छी थी। लफ़्ज़ों का चयन भी बड़ा अच्छा किया करते थे। जब भी कोई नया क़लम लेते तो पहले इस से बिसमिल्लाह लिखा करते थे फिर काम शुरू करते और वक़्त पर दफ़्तर आने के बहुत पाबन्द थे लेकिन दफ़्तर से वापसी यह नहीं कि जब वक़्त ख़त्म हुआ तो दफ़्तर से चले गए बल्कि जब तक काम नहीं ख़त्म होता था बैठे रहते थे और कई बार सारी सारी रात बैठे रहते थे और अगले दिन सुबह घर जाते थे। जब मैं वहां रब्वह में था तो मुख़्तलिफ़ वक़्तों में यही मैंने उन को करते देखा है। बड़ी मेहनत से दफ़्तर में आते थे और मग़रिब के वक़्त भी नमाज़ पढ़ने दफ़्तर से आ रहे हैं, इशा के वक़्त भी वहीं से आ रहे हैं। कई बार फ़ज्र के वक़्त भी आ रहे हैं। बड़ी मेहनत से काम करने वाले थे। कभी यह पर्वा नहीं की कि घर जाना है या दफ़्तर का वक़्त ख़त्म हो गया है। असल ग़रज़ थी काम , कि जमाअत का काम करना है। और एक बहुत बड़ी ख़ुसूसीयत उनकी यह भी थी कि कभी दूसरों से कोई ममला डिस्कस (discuss)नहीं करते थे। जो ख़त होता वह राज़ होता और हिमेशा राज़ रखा करते। इसी तरह नासिर सईद साहिब ने लिखा है कि 1974 ई में जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालेस इस्लामाबाद क़ौमी असैंबली में पेश होते थे तो यह भी इस में प्राईवेट सैक्रेटरी के अमले के तौर पर वहां थे और दफ़्तरी काम के इलावा यह दूसरों की मदद भी किया करते थे। कारकुनों के साथ मिल के बर्तन भी धो दिया करते थे। अत: यह बेनफ़्स इन्सान थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके दर्जात बुलंद करे। उनकी औलाद को भी और नस्ल को भी उनकी नेकियों पर क़ायम करे।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल18 फरवरी 2020 ई पृष्ठ 5 से 9)

ये दोनों ऊपर तले फ़ौत हुए हैं। इन दोनों मियां बीवी की जो नेकियां हैं उनको अल्लाह तआला उनके बच्चों में भी जारी रखे। उनकी माता जैसा कि मैंने कहा बीमार हैं और काफ़ी बीमार भी हैं ।अल्लाह तआला उन पर भी रहम और फ़ज़ल फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 14 फरवरी 2020 ई पृष्ठ 5 से 9)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

पृष्ठ 2 का शेष

एक साहिब ने निवेदन किया कि मैं पिछले साल से एक अमानत लिए फिर रहा हूँ। मेरी बहन ने मुझे हुज़ूर अनवर को सलाम पहुंचाने के लिए कहा था इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया वा अलैकुम अस्सलाम। महोदय ने निवेदन किया कि मुझे ब्लडप्रैशर की बीमारी है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया सुबह उठकर दो मील दौड़ लगाओ और दो गिलास पानी भी पिया करो। कहने लगा कि कल मुझे डाक्टर ने चैक किया है और बताया है कि मुझे शूगर भी है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया पानी पीने से शूगर को भी आराम आएगा

एक औरत ने निवेदन किया कि मुझे बैअत किए हुए तीन माह हो गए हैं। मैंने घरवालों को अभी तक नहीं बताया। मैंने ख़्वाब में देखा है कि मेरी माता कहती हैं कि हमने , घरवालों ने बैअत कर ली है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया उन्हें आहिस्ता-आहिस्ता हिक्मत के बताएं। MTA के साथ जोड़ें और उनको बताएं कि अहमदियत किया है , यह अहमदियों का चैनल है यह देखा करें। इस तरह उनको अहमदियत के बारे में पता लग जाएगा और वे माइल हो जाऐंगे। आहिस्ता-आहिस्ता करते रहें।

एक सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आपके एरिया में अगर अहमदी एक जगह इकट्ठे हैं तो सब मिलकर घर में नमाज़ पढ़ सकते हैं। आपके घर में या किसी दूसरे के घर में जहां भी प्रबन्ध हो सकता हो।

एक नौजवान ने निवेदन किया कि मैं सीरियन हूँ और नार्वे से आया हूँ , मैंने तीन बार ख़्वाब में देखा है कि मैं हुज़ूर से गले मिल रहा हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया व्यक्तिगत मुलाक़ात में इच्छा पूरी हो जाएगी। फिर फ़रमाया वापस जाते हुए देख लूँगा।

एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर का अरबों के लिए ख़िदमत पर और MTA अल्अरबिया 3 के आरम्भ पर शुक्रिया अदा किया। इस पर हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या आप MTAदेखते हैं। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि मैं अहमदी होने से पहले 24 घंटे MTA देखता था। इस वजह से मेरी नींद भी पूरी नहीं होती थी और मैं नमाज़ भी जल्दी जल्दी अदा करता था ताकि फिर MTAदेखने का सिलसिला जारी रख सकूं।

एक यमनी दोस्त ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर ने तीसरी विश्वव्यापी जंग का ज़िक्र फ़रमाया है क्या इस्लाम इस जंग के बाद फैलेगा या पहले ? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि असल बात यह है कि जमाअत अहमदिया इस्लाम की जो सही और वास्तविक शिक्षा पेश करती है उसका दुनिया को पता लगना चाहिए ताकि जब जंग के हालात पैदा हों तो लोगों को याद आ जाए कि कोई लोग इस सही रास्ते की तरफ़ भी बुला रहे थे। बाक़ी जो ख़ुदा तआला के अधिकार अदा नहीं करते वे बहरहाल इस जंग से प्रभावित होंगे। जब आप इस्लाम की असल शिक्षा पेश करेंगे तो दुनिया को यह भी मालूम हो जाएगा कि जो इस्लाम मुल्ला पेश कर रहा है या विभिन्न फ़िरक़े पेश करते हैं वह ग़लत है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को फ़रमाया था "मुसलमानों को जो सारी धरती पर हैं एक धर्म पर जमा करो" अत: जमा होंगे तो बचेंगे। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया

आग है पर आग से वे सब जाएंगे

जो कि रखते हैं ख़ुदाए ज़ुल अजायब से प्यार

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हर अहमदी का काम है कि वह इस्लाम का वास्तविक पैग़ाम दुनिया तक पहुंचाए और बताए कि अमन की और नजात की एक ही राह है कि ख़ुदा की तरफ़ लौटो , हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को क़बूल करो, आपकी बैअत में आओ। जिस को ख़ुदा तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गुलामी में भेजा है इस के हिसार में आओ।

अरब लोगों की हुज़ूर अनवर के साथ यह मुलाक़ात 9 बजकर 35 मिनट तक जारी रही। इस के बाद जब हुज़ूर अनवर वापस जाने लगे तो फ़रमाया वह नौजवान कहाँ है जो गले मिलना चाहता था इस पर वह नौजवान दौड़ता हुआ आया और हुज़ूर अनवर से लिपट गया। हुज़ूर अनवर ने उसे अपने गले लगाया। उसने हाथ भी मिलाया ,हाथ मिलाने के भाद ढेरों ढेर प्यार भी लिया बाद में यह नौजवान निरन्तर रोता रहा और इस के साथियों ने उसे सँभाला दिया। कितना ख़ुशनसीब यह नौजवान था जो कुछ क्षणों मैं बरकतों के खज़ाने ले गया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए

मेहमानों की प्रतिक्रियाएं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के आज के ख़िताब ने मेहमानों पर गहरा प्रभाव छोड़ा और बहुत से मेहमानों ने स्पष्ट रूप से इस बात का व्यक्त किया कि ख़लीफ़तुल मसीह के ख़िताब से आज हमें इस्लाम की असल और वास्तविक अमन वाली शिक्षा का इल्म हुआ है। इन मेहमानों में से कुछ एक की प्रतिक्रियाएं नीचे लिखी हैं।

जॉर्जिया के वफ़्द में शामिल एक औरत हुज़ूर अनवर का ख़िताब सुनने के बाद कहती हैं कि मैं इस बात पर यक़ीन रखती हूँ की हुज़ूर अनवर निहायत ज़हीन और वसीअ नज़र इन्सान हैं। आप दूर अंदेश हैं और इस के अनुसार आप तय्यारी करते हैं।

जर्मनी से Andreas Weisbrot जो कि ईसाई पादरी और उस्ताद हैं अपनी भावनाओं को प्रस्तुत करते हुए कहते हैं: ख़लीफ़ा के ख़िताब ने मुझे हैरान कर के रख दिया। ऐटमी जंग के ख़तरा का मुझे इतना एहसास नहीं था। मेरा भी यही ख़्याल है कि हम सिर्फ उस वक़्त तरक़्क़ी कर सकते हैं जब हम समाजी इक़दार और अमन की तरफ़ तवज्जा दें और मिलकर अमन को तलाश करें। मुझे यक़ीन है कि इस मक़सद के लिए हमें एक मज़बूत समाज की ज़रूरत है जिस में हम रवादारी और बहुगुण समाज की फ़िज़ा को क़ायम करें और इस में धर्मों की मध्य बातचीत का एक बहुत अहम हिस्सा है

जर्मनी के इलाक़ा बाडहमबर्ग से सम्बन्ध रखने वाले एक मेहमान आख़म हूलर साहिब ने वर्णन किया कि मुझे इमाम जमाअत अहमदिया का ख़िताब बहुत ही अच्छा लगा है। हुज़ूर ने बेहतरीन रंग में दुनिया के स्यासी हालात पर रोशनी डाली है और अपनी जमाअत का बहुत अच्छा परिचय पेश किया है।

लेटोया के एक मेहमान खोंगड़ी असनोवह साहिब वर्णन करते हैं :हुज़ूर अनवर के शब्द बहुत ही ख़ूबसूरत और हक़ीक़त पर आधारित थे। हुज़ूर का चेहरा नूर से भरा नज़र आ रहा था। कामिल इत्तिहाद, कामिल मुहब्बत और बहुत ही अच्छा दोस्ताना रवैय्या इस जलसा पर देखने को मिला। मुझे यह बात भी बहुत पसंद आई कि बहुत अधिक संख्या में विभिन्न देशों के लोग जलसा में शामिल हुए।

करतशी साहिब जिनका सम्बन्ध मक़दूनिया से है वर्णन करते हैं: हुज़ूर अनवर का ख़िताब बहुत ही प्रभावित करने वाला था और इसी तरह माहौल अमन वाला था और यूं महसूस हुआ कि ये व्यक्ति किसी और जहां का है। हुज़ूर एक पिता की तरह हैं और अपने साथ एक नूर लिए हुए हैं

सबरीना बोख़ज़ साहिबा वर्णन करती हैं:मेरी राय के अनुसार इमाम जमाअत अहमदिया जब पहली बार स्टेज पर पधारे तो मैं बहुत ही प्रभावित हुई। आपने अपने आपको सब के क़रीब किया जिससे स्पष्ट हुआ कि आप खुले मिज़ाज के इन्सान हैं। आप के शब्द ठीक मेरी राय के अनुसार थे। मैं बहुत हैरान हूँ कि मुझे एक ऐसा इन्सान मिला है।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوۡبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

मीकाईल सेकाई जो एक डाक्टर हैं वर्णन करते हैं:हुज़ूर का ख़िताब बहुत ही दिलचस्प और मआरिफ़ से भरा था। हुज़ूर ने वर्तमान हालात पर रोशनी डाली और मालूम हुआ कि आप भी दुनिया के हालात पर ग़ौर करते हैं।

लाईबनेट रुख़साई जो कि कोसोवो के स्कूल में डायरेक्टर हैं वर्णन करते हैं:ख़लीफ़तुल मसीह का वजूद मेरी नज़रों में हैरान करने वाला है। आपका सियासत के बारे में इल्म और इसी तरह इन्सानी नफ़सियात का इल्म ग़ैरमामूली है। हर मेहमान का फ़र्ज़ था कि वह आपके ख़िताब को ग़ौर सुने।

उज़बेकिस्तान से सम्बन्ध रखने वाले एक मेहमान बरोट ख़ुदेख़मोराद वर्णन करते हैं:ख़लीफ़तुल मसीह का ख़िताब मुझे बहुत ही दिलचस्प लगा और पसंद आया है। खासतौर पर जो इन्सानी हमदर्दी का पहलू आपने वर्णन फ़रमाया है वह मुझे निहायत ही उम्दा लगा। इस के इलावा बहुत से विभिन्न देशों का ज़िक्र हुआ जिनमें आज के ज़माना में मुसीबतें और समस्याएँ हैं। मगर जिस बात ने मुझको सबसे पहले प्रभावित किया था वह आपकी आवाज़ थी।

स्वीज़रलैण्ड के एक मेहमान आलीवर टेंडर वर्णन करते हैं: यहां की तक़रीर बहुत ही उच्च और दिलचस्प हैं। दिल चाहता है कि ऐसी तक़रीर बार-बार सुनी जाएं। मैं तीसरी बार शामिल हो रहा हूँ और एक बार फिर हैरान रह गया हूँ।

एक मेहमान एड्रियन गाशी वर्णन करते हैं मैंने समय के ख़लीफ़ा को पहली बार ज़िन्दगी में देखा है और आप बहुत ही ज़हीन तथा अक्लमन्द और समझदार शख़्सियत हैं। आपके उठने और बैठने से अल्लाह तआला की ज़ात नज़र आती है और इसी तरह आप आने वाले वक़्त के बारे में बहुत ग़ौर तथा फिक्र करते हैं

जेनी लिवर बीर साहिबा जर्मनी से कहती हैं: समय के ख़लीफ़ा ने अपने दिल से सबको सम्बोधित किया है। मेरे अभी तक रौंगटे खड़े हैं मैं इस ख़िताब से बहुत प्रभावित हूँ।

मिस्टर Hans Oliver जो फ्रैंकफ़र्टकी एक ला फ़र्म के सीनीयर पार्टनर हैं और पेशा के लिहाज़ से वकील हैं,उन्होंने अपनी भावनाओं को प्रस्तुत करते हुए हुए कहा कि धीमे और ठहरे हुए लहजे में की जाने वाली इमाम जमाअत अहमदिया की तक़रीर मेरे लिए बहुत पर जोश और जोश रखने वाला प्रभाव रखती थी। दुनिया के बज़ाहिर सुकून वाले और रोज़मर्रा के मामूल के अनुसार चलते हुए हालात में , आने वाले ख़तरों और जंग को भाँप लेना आम इन्सानी फ़िरासत से ऊंची बात है और इमाम जमाअत अहमदिया ने न सिर्फ भविष्य में होने वाले ख़तरों को वास्तविक तौर पर महसूस किया है बल्कि साथ साथ दुनिया को ख़बरदार भी कर रहे हैं। इसी तरह उन्होंने इमीग्रेशन को जिस तरह हुकूमतों के समाजी और आर्थिक स्वार्थों के साथ जोड़ कर दिखाया है वह समीक्षा हक़ीक़त पर आधारित था

इसी तरह कहते हैंकि एक क़ानून दान के तौर पर मैं इस पहलू को अपने साथियों से वर्णन करना और दो तरफ़ा ज़रूरत की बात को आम करना चाहूँगा। क्योंकि आम तौर पर यहां लोग सिर्फ पनाह लोने वालों के आने का नकारात्मक ज़िक्र ही करते हैं मगर उस के साथ जुड़े हुए देशों और क़ौमों के स्थानीय स्वार्थों को नज़रअंदाज कर जाते हैं।

मिस वेरीना लुडविग जो Lufthansa आएरलाइन की आई.टी डिपार्टमैंट की एक्सपर्ट हैं , उन्होंने ख़िताब के बाद वर्णन किया: इमाम जमाअत अहमदिया के ख़िताब को सुनते वक़्त निरन्तर सोच रही थी कि उनकी शख़्सियत और बातचीत अन्य रहनुमाओं से विभिन्न है। यह दरुस्त है कि लोग प्राय तौर पर दुनिया को आने वाले ख़तरों से बचने की बात भी करते हैं और विश्वव्यापी शान्ति के क़ियाम पर बात करना तो लीडरों के लिए एक तरह से "हॉट केक"है। मगर इमाम जमाअत अहमदिया की बातचीत को जो ताक़त उनकी मुतहम्मिल और तासीर वाली शख़्सियत से मिलती है वह मैंने और कहीं नहीं देखी। उनका चेहरा उनकी बात की सच्चाई पर दलील था और दूसरी बात यह कि इन जैसा व्यस्त आदमी इतना रिसर्च वर्क कैसे कर सकता है जब तक उनके दिल में इन्सानियत के लिए गहरा दर्द ना हो। उन्होंने दुनिया-भर से मवाद इकट्ठा क्या, उस की समीक्षा पेश की और सिर्फ मज़हबी दृष्टिकोण से ही नहीं बल्कि समाजी और आर्थिक हवालों से दुनिया की लीडरशिप पर स्पष्ट किया है कि स्थायी विश्वशान्ति ख़ौफ़े ख़ुदा से सम्बध है और अगर ज़ाती हितों से ऊपर उछ कर हो कर इक़दामात न किए गए तो ऐटमी जंग की भयावह तबाही के ज़िम्मेदार हम होंगे। मेरे निकट इस क़दर वज़ाहत के साथ पैग़ाम दे दिया गया है कि अगर द्वैष रोक न हूँ तो इन्सान के रौंगटे खड़े करने के लिए ये चेतावनी काफ़ी थी। मैं चाहती हूँ कि आम लोगों से लेकर संस्थाओं के सरबराहान और हुकूमती मेम्बर और कॉरपोरेट सैक्टर के फ़ैसला करने वालों तक यह पैग़ाम पहुंचना चाहिए क्योंकि इन्सानियत की वसीअ तर लाभों के लिए इसका ग्लोबल स्तर पर इदराक आम होना बहुत ज़रूरी है।

मिस्टर Gunter Hieter जो म्यूनख़ जर्मनी से जलसे में आए थे और पेशा के लिहाज़ से माओंटेन गाईड हैं ,ने कहा कि समाज में स्थायी अमन के क़ियाम के लिए और इन्सानियत को अगले सम्मुख आने वाले ख़तरों के लिए भरपूर चेतावनी इमाम जमाअत अहमदिया के ख़िताब में मौजूद था और अब यह सिवल सोसाइटी और हुकूमतों का काम है कि इस से फ़ायदा उठाएं और अपने अपने क्षेत्र में ऐसे क़दम उठाएं जिनसे इन्सानियत बहैसीयत सामूहिक इन फ़सादों से बच सके। यह दरुस्त है कि इमाम जमाअत अहमदिया की फ़िरासत जिन हालात को समय से पहले देख चुकी है उसके समर्थन में उन्होंने अन्य दानिशवरों के हवाले भी दिए हैं मगर खुले शब्दों में दुनिया को सम्बोधित कर के ख़बरदार करने का काम सिर्फ आप ही कर हैं।

मिस्टर कलाओज़े और मिसिज़ हाइडे (मियां बीवी) जर्मनी के शहर Wiesbaden से पहली बार जलसा में शामिल हुए थे। जर्मन मेहमानों से हुज़ूर अनवर के ख़िताब के बाद उन्होंने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि हमारा यहां आने से पहले तो बहुत ख़ौफ़ज़दा सा हाल था और यद्यपि कई साल से जमाअत का परिचय था मगर जलसे में आते हुए हमारी शंकाए होते थे जिनकी बुनियाद इस्लाम और मुसलमानों के बारे में मीडिया से सुनी सुनाई मालूमात पर ही थी, इसी लिए यहां आते हुए हम आज भी बहुत घबराए हुए थे कि पता नहीं कैसा हुजूम होगा लेकिन आने के बाद हम दोनों मियां ऐसे relax हैं और माहौल में इतना अपनापन है कि हम मानो अपने ही माहौल में घूम फिर रहे हैं। जहां तक इमाम जमाअत अहमदिया के ख़िताब का सम्बन्ध है तो मैं निवेदन करना चाहती हूँ कि मैं ख़ुद जंग के दिनों मैं पैदा हुई थी और मैंने जंग के फ़साद यहां आपनी आंख से ख़ुद देखे हैं या और इमाम जमाअत अहमदिया जिन तबाहियों और जिस भयावह मंज़र से पहले समय से ख़बरदार कर रहे हैं और जिस दर्द और संजीदगी की रूह से इन्सानियत को सचेत कर रहे हैं इस का प्रभाव मुझ जैसों पर जिन्होंने विश्वयुद्ध देख रखी है, और तरह से होता है। इसलिए हम इमाम जमाअत अहमदिया के ख़िताब के शब्द शब्द से सहमत हैं और चाहते हैं कि मौजूदा नस्ल उसका बरवक़्त इदराक और एहसास कर सके।

इस औरत के पति मिस्टर Klaus ने कहा कि एक बात में भी ख़लीफ़ा साहिब की शख़्सियत के बारे में कहनी चाहता हूँ जो मेरी बीवी ने नहीं नोट की वह यह है कि इमाम जमाअत अहमदिया ने दुनिया के सामूहिक ख़तरों का विस्तारपूर्वक समीक्षा पेश की मगर एक मज़हबी सरबराह के तौर पर ख़ुद को इन चीज़ों से अलग और बाहर रखा और ख़तरों की निशानदेही ज़रूर की मगर न तो किसी का नाम लिया और न ही दौरान बातचीत उनके अंदाज़ा से किसी तरफ़ ख़ास झुकाओ का प्रभाव मिल रहा था। उनकी नसीहत का अंदाज़ पर सचेत करने का दर्द का था न कि ज़ाती पसन्द नापसन्द का। ज़ाती झुकाओ का छूटी सी शंका भी आपकी बातचीत से नहीं मिला और मज़हबी सरबरहों का यही स्थान होता है कि वह नसीहत करे और तवज्जा दिलाए मगर ज़ाती झुकाओ से ऊंचा उठ कर। इस लिहाज़ से मैं ख़लीफ़ा की बातचीत में पाई जाने वाली स्यासी समझ और समझ का मानने वाला हो कर जा रहा हूँ।

मिस्टर Jaan जो पेशे के लिहाज़ से इंजीनियर हैं और कासल से जलसे में शामिल हुए हैं उन्होंने अपनी भावनाओं को इस तरह व्यक्त किया कि इमाम जमाअत अहमदिया की तक़रीर से आम आदमी को बहुत फ़ायदा पहुंचा है क्योंकि जो बातें अहले हुकूमत और सरबराहों की मज्लिसों और तक़रीरों तक ही रहती हैं उन्होंने आसान और तासीर वाले शब्द में जन साधारण तक भी पहुंचा दी हैं और मज़हब , सियासत , आर्थिकता और पालिसी प्लैनिंग जैसे विषयों को जैसे तरीके में वर्णन कर दिए हैं कि हर वर्ग के लोग बात समझ जाएं और अपने अपने क्षेत्र में इन ख़तरों और तबाहियों के बारे में प्रभावित करने वाले तरीके पर सचेत करें।

मिस जोज़फ़ीना जो शहर कासल जर्मनी से आई थीं और पेशा के लिहाज़ से मैडीकल अस्सिटैंट हैं ,उन्होंने अपनी भावनाओं को इस तरह व्यक्त किया कि इमाम जमाअत अहमदिया ने अपनी तक़रीर में इन समस्त मामलों के बारे में सचेत किया है जिनकी तरफ़ तवज्जा करने की इस वक़्त दुनिया को ज़रूरत है और जिस तरह उन्होंने यूरोप में जर्मनी को अपना किरदार अदा करने की नसीहत की है और फिर बड़े दायरे में यूरोप को नसीहत की है कि वह दुनिया में अपना किरदार अदा

करे और स्थायी विश्वशान्ति के लिए अपने इलाक़ाई स्वार्थों से ऊंचे हो कर आने वाली नस्लों को ऐटमी जंगों से बचाने के लिए भरपूर कोशिशें करे, तो मुझे ये बातें बिलकुल अनुकरण योग्य लगती हैं और उनको नज़र अंदाज करना दुनिया के समाजी मुआशरती और विश्वव्यापी आर्थिक स्वार्थों के विरुद्ध होगा।

मिस्टर नोबर्टवागज़ इमीग्रेशन लायर हैं और फ़रंकफ़र्ट से ख़िताब सुनने के लिए जलसा में शामिल हुए थे ,उन्होंने अपनी भावनाओं को इस तरह व्यक्त किया कि मैं जलसे में यद्यपि पहली बार शामिल नहीं हो रहा और अहमदियों के केसिज़ के वकील के तौर पर मुझे प्राय बातों का इल्म होता रहता है मगर इमाम जमाअत अहमदिया का आज का ख़िताब मेरे लिए बिलकुल नए पहलू और नई बिन्दुओं पर आधिरत था। यद्यपि कि मैं अपनी भावनाओं को व्यक्त कर रहा हूँ मगर यह व्यक्त एक तरह का फ़ौरी प्रतिक्रिया है जो मैं कह रहा हूँ जबकि अभी इस तक़रीर मेंमेरे लिए पेशावराना ज़रूरत के बहुत से अहम बिन्दु हैं जिनको में घर जाकर दुबारा चिन्तन करूंगा। मुहाजिरीन और प्रवासियों के मसले पर आज जो दृष्टिकोण इमाम जमाअत अहमदिया ने वर्णन किया है इस से मेज़बान देशों और मुहाजिरीन के आपसी मामलों में एक बराबरी और सम्मान पैदा होगा और खासतौर पर जिस तरह उन्होंने गिनती की मदद से बुढ़ापे और रिटायरमैंट की उम्र के हवाले से जर्मनी की लोगों की क़ुव्वत की ज़रूरतों को उजागर किया है इस से शरणार्थियों की इज़्ज़त नफ़स को भी सहारा मिलेगा और मेज़बान संस्थाओं में भी इन मुहाजिरीन की इज़्ज़त और वक़ार बढ़ेंगे। मगर मैं दुबारा कहना चाहता हूँ कि अभी मेरे लिए और इमीग्रेशन ला की प्रैक्टिस करने वाले मेरे साथियों के लिए इस में बहुत सा मवाद है जो हमारे काम आ सकता है

स्विटज़रलैंड से लैला साहिबा वर्णन करती हैं कि मैं एक संस्था के लिए काम करती हूँ और हम अमन को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहे हैं। आज जब मैंने ख़लीफ़ा की तक़रीर सुनी तो मुझे हर एक शब्द में अमन ही अमन नज़र आया। मुझे हर एक शब्द में बर्दाश्त और इन्सानियत की इक़दार नज़र आएं। अगर आप अमन , बर्दाश्त और इन्सानियत को आपस में इकट्ठा कर दें तो फिर आप एक ख़ूबसूरत समाज बना सकते हैं। ख़लीफ़ा बहुत नेक वजूद हैं। अगर कोई अहमदी न भी हो तब भी यही लगता है कि आप ख़ुदा की तरफ़ से हैं। जो भी आप कहते हैं वह हमारे ही फ़ायदा के लिए है और आप बड़ी दिलेरी से सच्चाई वर्णन करते हैं। सबसे ज़्यादा प्रभावित करने वाली बात थी कि आपने समस्त समस्याएँ वर्णन करने के बाद मज़हब से इस का हल पेश फ़रमाया और बताया कि इन समस्त समस्याओं का हल ख़ुदा को पहचानने में है। आपने यह साबित किया है कि मज़हब मसला नहीं बल्कि समस्याओं का हल है। मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ और इस अवसर को कभी भुला नहीं पाऊँगी।

स्विटज़रलैंड से प्रोफ़ैसर हाशिम अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहते हैं :जब कि अन्य लोग अपने छुपे हुए उद्देश्यों के लिए झगड़ रहे हैं,ख़लीफ़ा लोगों को इन्सानियत की तरफ़ बुला रहे हैं और अमन के लिए जिहाद कर रहे हैं। आपका तरीक़ा मुहब्बत है। आज आपकी तक़रीर विशेष रूप से मानव जाति से मुहब्बत पर आधारित थी। आपने बताया कि ख़ुदा चाहता है कि हम अमन से रहीं। यह बहुत अहम बात है कि ख़ुदा ने हमें आपसी लड़ाईयों के लिए नहीं भेजा बल्कि ख़ुदा ने तो हमें एक दूसरे का सम्मान करने के लिए भेजा है। ख़लीफ़ा ने यह भी बताया है कि इस्लाम पश्चिमी समाज के लिए ख़तरा नहीं है बल्कि हक़ीक़त तो यह है कि मुसलमान वास्तविक इस्लाम की पैरवी करते हुए भी पश्चिमी में integrate कर सकते हैं और आप यह ख़ुद अपना उदाहरण क़ायम करते हुए साबित कर रहे हैं क्योंकि आपकी जमाअत बेहतरीन अंदाज़ में यहां integration कर रही है। आख़िर पर मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं दिल से ख़लीफ़ा से मुहब्बत करता हूँ। मुझे आपसे और आपकी जमाअत जिसकी आप क़ियादत कर रहे हैं से मुहब्बत करने के लिए अहमदी होने की ज़रूरत नहीं है। तक़रीर के बाद मुझे ख़लीफ़ा से हाथ मिलाने का भी करने का अवसर मिला और मैं इस लम्हा को सारी उम्र याद रखोंगा

एक जर्मन लड़की Soraya Brecht अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहती हैं :मुझे यह बात बहुत अच्छी लगी कि आपकी तक़रीर में वर्तमान समस्याओं पर बात की गई। आपसे पहले भी कुछ स्यासतदानों ने बात की लेकिन उनकी बातों में कोई वज़न न था। वही मामूल की बातें थीं जो कोई भी कह सकता है लेकिन ख़लीफ़ा की तक़रीर बिलकुल विभिन्न थी। आपने वास्तविक समस्याओं के बारे में बात की। आपने जो जंग की बात की, आपने माहौलियाती तबदीलियों की बात की, आपने इमीग्रेशन की बात की। यह वे समस्याएँ हैं जो अहम हैं और फिर आपने उनका हल भी बताया कि मज़हब पर रोकें लगाने की बजाय मज़हब को बढ़ावा दिया जाए। लोग ख़ुदा की तरफ़ आएं। मैं समझती हूँ कि समस्त दुनिया में आप इस्लाम के बेहतरीन प्रतिनिधि हैं। आप वह शख़्सियत हैं जो लोगों को इस्लाम क़बूल करने पर मजबूर कर देंगे और इस बात पर लोगों को यक़ीन दिला देंगे कि इस्लाम अमन का मज़हब है। ख़लीफ़ा ने अपनी तक़रीर में कुछ वाक्य प्रयोग किए जो मुझे बहुत पसंद आए जैसा कि आपने फ़रमाया कि हर कोई चाहता है कि उसके घर और देश में अमन क़ायम हो , इस इच्छा के बावजूद ऐसे काम करते हैं जिनसे सिर्फ़ नफ़रत ही बढ़ सकती है। हर एक को इस के बारे में सूचना चाहिए और इस तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए।

ख़लीफ़तुल मसीह ने बहुत स्पष्ट अंदाज़ में बता दिया है कि आजकल जो जंगें हो रही हैं इस का मज़हब से कोई सम्बन्ध नहीं है। आपने स्यासी मामलों पर इस तरह रोशनी डाली है जिस तरह बेहतरीन समीक्षक भी नहीं कर पाते।जैसा कि आपने फ़रमाया कि ताक़तवर देश कमज़ोर देशों से फ़ायदे उठाते हैं, कई बार यह फ़ायदे ज़ाहिरी तौर पर उठाए जाते हैं और कई बार पोशीदा तौर पर भी उठाए जाते हैं और उनको मजबूर किया जाता है कि वह ताक़तवर देशों के लाभों को सुरिक्षत करें। मैं यही कहना चाहती हूँ कि ख़लीफ़ा बहुत अज़ीम शख़्सियत हैं और में उनकी अज़मत की मानने वाली हो गई हूँ।

एक और जर्मन औरत ने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा:मैं दूसरी बार जलसा पर आई हूँ और ख़लीफ़ा से मिली हूँ। आप बहुत उच्च शख़्सियत के मालिक हैं। आपकी इस साल तक़रीर तो पिछले साल से भी ज़्यादा ताक़तवर थी। दूसरे लोग स्यासतदानों की तरह बातें करते हैं, वे सिर्फ अपने सुनने वालों को ख़ुश करना चाहते हैं। परन्तु ख़लीफ़ा का मक़सद ही कुछ और है और आपका मक़सद सिर्फ और सिर्फ सच बोलना है। आपने स्पष्ट किया है कि कौन से मामले अमन की राह में रूकावट हैं। यह बहुत शानदार बात थी कि ख़लीफ़ा ने अन्य मुक़र्ररीन की तक़रीर में उठाए गए प्वाईंटस पर प्रभी रोशनी डाली, इस से आपकी आजिज़ी ज़ाहिर होती है और यह भी ज़ाहिर होता है कि आप वास्तविक इल्मी शख़्सियत हैं। जिस बात ने मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित किया वह ख़लीफ़ा की जुर्रत थी। आपने जिस तरह अमरीका , रूस, चीन , इस्राईल और समस्त बड़ी ताक़तों की बात की है और बताया है कि ये नाइंसाफ़ी से काम ले रहे हैं , ये बातें कोई आम व्यक्ति नहीं कर सकता। आपने बताया कि यही नाइंसाफ़ियां इन्सानियत को अन्धेरों में धकेल रही हैं। मुझे ख़लीफ़ा के समाप्न शब्द भी बहुत अच्छे लगे हैं जहां आपने दुनिया के लिए दुआ की है , आपने दुआ की है कि काश अमन का नीला आसमान उदय हो। जब मैंने यह शब्द सुने तो मुझे मालूम हुआ कि ख़लीफ़ा सिर्फ़ मज़हबी रहनुमा और इल्मी शख़्सियत ही नहीं बल्कि आप अच्छा शायराना मिज़ाज रखते हैं।

एक कुर्द लड़की अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहती है:कुछ साल

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

पहले मेरी माता ने अहमदियत क़बूल की थी लेकिन इस वक़्त में तैय्यार न थी। आज हुज़ूर को देखने और हुज़ूर का ख़िताब सुनने से मेरी समस्त शंकाए दूर हो गई हैं, पिछले साल भी मैं आई थी लेकिन यह कैफ़ीयत न थी जो आज है। मुझे आपके वजूद से नूर निकलता महसूस हुआ। मेरी माता बहुत ख़ुश होंगी क्योंकि अब मुझे यह एहसास बहुत शिद्दत से होने लगा है कि मुझे अहमदी हो जाना चाहिए।

एक जर्मन लड़की Hana Jakupi अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहती हैं :मुझे यह बहुत अच्छा लगा कि ख़लीफ़ा ने सिर्फ मज़हब पर ही बात नहीं की बल्कि सियासत पर भी बात की है। यह मेरे लिए किसी मोजिज़ा से कम नहीं कि मैं एक मज़हबी रहनुमा को इस तरह खुल कर दुनिया के समस्याओं पर बात करते देख रही हूँ। लोग कहते हैं कि दुनिया में समस्त बुराइयां और लड़ाइयां मज़हब की वजह से हैं लेकिन आपने यह साबित कर दिया है कि यह बिलकुल ग़लत है। ये जंगें हक़ीक़त में आर्थिक हर्तों के गर्द घूमती हैं या फिर सामाजिक कारण हैं, जहां लोग नाइंसाफ़ियों के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद करते हैं। आपकी तक़रीर वक़्त की अहम ज़रूरत है। आपकी आजिज़ी बहुत पसंद आई। ख़लीफ़ा की तक़रीर के आख़िरी हिस्सा ने बहुत प्रभाव किया। मुझे वह मुहब्बत महसूस हुई जो ख़लीफ़ा को इन्सानियत से है।

असमा कुफ़तारवोह साहिबा अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहती हैं: ख़लीफ़ा के मेहमानों से अंग्रेज़ी में ख़िताब के बाद मेरी दिली कैफ़ीयत बदल गई और मुझे अपने अंदर नई उम्मीद का एहसास पैदा हुआ। यह काम जो आप कर रहे हैं अल्लाह तआला के निकट बहुत उच्च और बुलन्द हैं। मैंने ख़लीफ़ा को एक बेहतरीन क़ाइद और बेहतरीन ख़तीब और मोमिन इन्सान पाया।

7 जुलाई 2019 ई(दिनांक इतवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह चार बजकर पंद्रह मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्तता रही।

आज जमाअत अहमदिया जर्मनी के जलसा सालाना का तीसरा और आख़िरी दिन था। प्रोग्राम के अनुसार 3 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में पधारे और बैअत का आयोजन हुआ। यह एक विश्वव्यापी बैअत थी जो MTA इंटरनैशनल के द्वारा दुनिया भर के देशों में सीधा (Live) प्रसारित हुई और दुनिया के समस्त देशों की जमाअतों ने इस सैटेलाई सम्पर्क के द्वारा अपने प्यारे आक़ा की बैअत का सौभाग्य पाया।

आज हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के मुबारक हाथ पर जर्मनी, गेम्बया, चेचन्या, सीरिया, रुमानीया, बेल्जियम, सेनेगाल, लुबनान,- गिनी कोनाकरी, उज़बेकिस्तान, हॉलैंड, तुर्की, सर्बिया, कोसोवो(Kosovo) घाना और अल्बानिया से सम्बन्ध रखने वाले 37 लोगों ने बैअत का सौभाग्य पाया। आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ ज़ुहर तथा इशा जमा करके पढ़ाई।नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जैसे स्टेज पर पधारे तो सारा जलसा ज़ोरदार नारों से गूंज उठा। और जमाअत के लोगों ने बड़े वलवले और जोश के साथ नारे बुलंद किए।

समापन आयोजन का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो आदरणीय मुहम्मद इलयास मुनीर साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला जर्मनी ने की और इस के बाद उस का उर्दू अनुवाद पेश किया। तिलावत का जर्मन अनुवाद भी पेश किया गया। इस के बाद प्रिय मुर्तज़ा मन्नान साहिब ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मंज़ूम कलाम

हर तरफ़ फ़िक्र को दौड़ा के थकाया हम ने
कोई दीं दीने मुहम्मद सा न पाया हम ने

मैं से चुने हुए शेर अच्छी आवाज़ से पेश किए।

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार जर्मनी के प्रान्त Thuringian स्टेट की सैक्रेटरी फ़ार कल्चर तथा यूरोप, डाक्टर Babette Winter ने अपना सम्बोधन पेश किया। इसके बाद एक अरब स्कॉलर डाक्टर मुहम्मद हब्श साहिब ने जिनका सम्बन्ध सीरिया से है अपना सम्बोधन पेश किया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तालीमी मैदान में नुमायां कामयाबी प्राप्त करने वाले और उच्च योगय्ता दिखाने वाले छात्रों को प्रमाणपत्र और मैडल प्रदान फ़रमाए।

हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथ से निम्नलिखित 53 ख़ुशनसीब छात्रों ने तालीमी ऐवार्ड प्राप्त किए।ऐवार्ड लेने वाले एन53 छात्रों में से41 का सम्बन्ध जर्मनी से है जब कि एक का पाकिस्तान से, एक बेल्जियम से, दो का फिनलैंड से, एक का तुर्की से, एक का स्विटज़रलैंड से, एक लेथोनिया से, दो का स्वीडन , एक का स्पेन से, एक का बौरकीना फासो और एक का बेनिन से था

कलीम अहमद सय्यद(जर्मनी) Specialization in Surgery

मुहम्मद मुहसिन भट्टी (जर्मनी) Specialization in Internal Medicine

आमिर इमरान (जर्मनी) Specialization in General Surgery

डाक्टर मोतमिद अहमद(जर्मनी) Specialization in Internal Medicine

डाक्टर मोतमिद अहमद(जर्मनी)Ph.D in Medical

अली वजाहत (जर्मनी)Ph.D in Dentistry

अब्दुल अज़ीम (जर्मनी) Ph.D in Mechanical Engineering

इर्फ़ान अहमद भट्टी (जर्मनी) State Examination in Medicine

अहमद राना(जर्मनी) State Examination in Medicine

वलीद अहमद ख़ान मलिक(जर्मनी) M.A in Peace and Conflict Studies

कफ़ील अरशद(जर्मनी)M.Sc in Electrical Engineering, Information Technology & Business Management

कलीम अहमद शेख़ (जर्मनी) M.Sc in Chemistry

सजील असलम काहलों(जर्मनी) M.Sc in Business Analystics

समीअ अल्लाह वाहिला(जर्मनी)M.A in International Management

क़ासिद अहमद (जर्मनी)M.Sc in Applied Geo Science

वसीम अहमद मिर्ज़ा (जर्मनी) MBA

मुदस्सर शकील (जर्मनी)M.Sc in Electrical Engineering & Information Technology

हुस्न तारिक़ (जर्मनी)M.Sc in Management

मुबश्शिर अहमद मिन्हास (जर्मनी) M.Sc in Polymer Material Science

सफ़ीर अहमद (जर्मनी) M.Sc in Power Engineering

दानिश इक़बाल राना(जर्मनी) M.Sc in Agro Bio Technology

सुहेल मक़सूद (जर्मनी)M.Sc in Business Informatics

मुनीब आबिद(जर्मनी) M.Sc in Energy Science &

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 5 March 2020 Issue No. 10

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

Technology

ताहिर महमूद (जर्मनी) M.Sc in Electrical Engineering

अर्सलान अहमद ताहिर(जर्मनी) M.Sc in Construction & Real Estate Managment

नवेद ख़ान मलिक (जर्मनी) B.Sc in Software Engineering

सरमद अहमद बाजवा (जर्मनी) B.Sc in International Business Information Systems

कलीम अहमद (जर्मनी) B.A in Business Informatics

ज़ीशान अजमल (जर्मनी) B.A in Public Adminstration & Police Managment

फ़वादुद्दीन अहमद (जर्मनी Bachelor of Enginerring in Electrical Engineering

सफ़वान ख़ालिद (जर्मनी) Bachelor of Engineering in Urban Planning

मुहम्मद हुबैश (जर्मनी)B.A in Social Works

उसामा अहमद (जर्मनी)B.Sc in Physics

नवेद अहमद (जर्मनी)B.A in Business Administration

अहमद कामरान लोन (जर्मनी) B.A in Business Administration

हमज़ा अली देश(जर्मनी) B.A in Film & T.V

नबील अहमद(जर्मनी) B.Sc in Business Adminstration

आमिर ख़ान (जर्मनी) A - Level Abitur

यूनुस लतीफ़ हुई(जर्मनी)A - Level Abitur

शाह जैन मन्सूर (पाकिस्तान) Masters in Mechanical Engineering

जव्वाद ज़फ़र (बेल्जियम) M.Sc in Architecture

अम्मार अहमद(जर्मनी) M.Sc in Management of Innovation

सय्यद अबदुस्समद (फिनलैंड) M.Sc in Information Technology

सुहैब अहमद (तुर्की) M.Sc in Data Science

शहरयार अहमद मलिक (स्विटज़रलैंड) M.A in Business Management

मसरूर अहमद क़मर (लैथवानिया) Bachelor of Nursery in General Practice Nurfsing

अदील अहमद (जर्मनी) B.Sc (Honours) in Mechatronics Engineering

रईस अहमद(फिनलैंड) Bachelor of Nursing in Social & Health Care

काशिफ़ महमूद विर्क(स्वीडन)Bachelor in History of Religion

उम्र तनवीर बट रमीज़(स्पेन) A - Levels

हमज़ा हयात(स्वीडन) International Baccalaureate Bilingual Diploma

मिर्ज़ा ईक़ान (बुर्कीना फासो) Baccalaureate F.A

ख़ाक़ान अहमद आरिफ़ (बेनिन) Baccalaureate

तक़सीम ऐवार्ड की आयोजन के बाद पाँच बजकर 18 मिनट पर हुज़ूर अनवर ने अपना इख़तताभी ख़िताब फ़रमाया

(शेष....................)

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

पर्दा के बारे में हमारे फ़र्ज़

क़ुरआन करीम की आयत 32 में अल्लाह तआला आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करेत हुए फ़रमाता है

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا
مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ

अनुवाद ::और मोमिन औरतों से कह दे कि वे अपनी आँखें नीची रखा करें और अपनी शर्म योग्य स्थानों की हिफ़ाज़त किया करें और अपनी सुन्दरता को ज़ाहिर न किया करें सिवाए उस के जो अपने आप ज़ाहिर हों और अपनी ओढ़नियों को अपने सीना से गुज़ार कर ओढ़ा करें।

उम्मुल मोमनीन हज़रत आयशा रज़ि फ़रमाती हैं कि जब यह आयत नाज़िल और हुज़ूर ने हमें यह हुक्म सुनाया तो हम औरतें शीघ्र उठीं और बारीक कपड़े छोड़कर अपने मोटे मोटे कपड़े छांटे और उनके दुपट्टे बनाए।

(अबू दाऊद किताबुल्लिबास)

इसी तरह क़ुरआन करीम की सूरत अहज़ाब आयत 60 में अल्लाह तआला फ़रमाता है

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَ بَنٰتِكَ وَ نِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ
عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٦٠﴾

अनुवाद: हे नबी अपनी बीवियों और अपनी बेटियों और मोमिनों की बीवियों से कह दे कि जब वे बाहर निकलें अपनी बड़ी चादरों को सिरों से घसीट कर अपने सीनों तक ले आया करें।

ज़माना के इमाम सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर्दा के बारे में फ़रमाते हैं कि

"इस्लामी पर्दा से यह हरगिज़ मुराद नहीं है कि औरत जेल ख़ाना की तरह बंद रखी जाए। क़ुरआन मजीद का अर्थ यह है कि औरतें पर्दा करें। वे ग़ैर मर्द को न देखें। जिन औरतों को बाहर जाने की आवश्यक ज़रूरत कामों के लिए पड़े उन को घर से बाहर निकलना मना नहीं है। बे बेशक जाएं लेकिन नज़र का पर्दा ज़रूरी है।

(अल-हकम भाग 5 पृष्ठ 15 दिनांक 24 अप्रैल 1901 ई पृष्ठ 3)

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जलसा सालाना कैनेडा 2016 ई के मौक़ा पर औरतों से ख़िताब में फ़रमाते हैं

"हम ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हमने अल्लाह तआला के इस भेजे हुए और मसीह मौऊद तथा महदी मअहूद को मान लिया और इस की बैअत में शामिल हो कर यह ऐलान किया कि हम शैतान के हर हमला को अल्लाह तआला की मदद से इस पर उल्टा देंगे। इस के हर बहकावे पर अल्लाह तआला का फ़ज़ल मांगते हुए बचने की कोशिश करते चले जाऐंगे। धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता करेंगे। अत: आप इस बात पर अल्लाह तआला का जितना भी शुक्र करें कम है। लेकिन यह शुक्रगुज़ारी सिर्फ़ मुँह के ऐलान से ही मक़सद पूरा नहीं कर सकती कि अल्हम्दुलिल्लाह हम शुक्रगुज़ार हैं अल्लाह के कि हम अहमदी हो गए। इस के लिए अपनी ज़िम्मेदारियों को समझने की ज़रूरत है और अहमदी औरत और लड़की की सबसे बढ़कर यह ज़िम्मेदारी है क्योंकि उसने सिर्फ़ अपने आपको ही शैतान के हमलों से नहीं बचाना बल्कि अपनी नस्लों को भी इन हमलों से बचाना है।"

फिर फ़रमाया "क़ुरआन करीम में कुछ आदेश जो खासतौर पर औरत के बारे में आए हैं जो औरत के मुक़ाम को क़ायम करने के लिए हैं। हर अहमदी औरत को, हर अहमदी लड़की को इस का जायज़ा लेना चाहिए। जैसे पर्दा है, यह कोई ऐसा हुक्म नहीं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम या आपके ख़लीफ़ाओं ने जारी फ़रमाया। बल्कि यह वह हुक्म है जो क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला ने दिया है और विभिन्न जगहों पर इस को वर्णन किया है। इस का महत्व और इस की हिक्मत वर्णन फ़रमाई है और बड़े विस्तार से वर्णन किया है। बल्कि इस ज़माना की हालत को भी सामने रखते हुए वर्णन किया है।"

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल17 मार्च 2017 ई)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad